UPSC-CSE 2027/28

DAILY CURRENT AFFAIRS

ONE STOP SOLUTION

By **Faiyaz Sir**



COMPLETE COVERAGE | EXAM FOCUSED | ANALYSIS MADE EASY | STATIC + CURRENT INTEGRATION

STAY AHEAD
STAY PREPARED


14 November
Children's Day
“ जो व्यक्ति अधिकतर
अपने ही गुणों का बखान करता है,
वह अक्सर सबसे कम गुणी होता है। ”
Jawahar Lal Neharu

आज क्या पढ़ेंगे?

- भारत की नवीकरणीय ऊर्जा यात्रा
- रबी 2026-27 के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिड़ी दरें
- QUAD
- USA-India Tariff
- Export Diversification
- Manipur Issue
- Global Tuberculosis Report 2026
- Samudrayaan Project
- CPI Inflation
- Critical ban on Lithium ion Battery
- SCO civilizational Dialogue Forum
- Global Disruption of Microsoft
- Iran-Usa War
- China – Taiwan
- Bharat summit

पत्र सूचना कार्यालय
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

Infrastructure

भारत की नवीकरणीय ऊर्जा यात्रा: एक स्वच्छ भविष्य को शक्ति प्रदान करना

प्रविष्टि तिथि: 13 NOV 2026 13:08 PM

भारत का ऊर्जा परिदृश्य

देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करते हुए, एक स्वच्छ भविष्य का समर्थन करते हुए और ऊर्जा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए भारत का नवीकरणीय ऊर्जा परिदृश्य तेजी से अपना विस्तार कर रहा है। यह परिवर्तन सौर, पवन, जलविद्युत, जैव-ऊर्जा (बायो-एनर्जी), भू-तापीय (जियोथर्मल) और हरित हाइड्रोजन तक विस्तृत हुआ है।

नीतिगत समर्थन, बुनियादी ढांचे का विकास, घरेलू उत्पादन, विनिर्माण विस्तार और व्यापक ऊर्जा पहुंच इस परिवर्तन को आकार दे रहे हैं। घरों के लिए रूफटॉप सोलर से लेकर बड़े पवन, फ्लोटिंग सोलर और स्टोरेज परियोजनाओं तक, भारत अपने ऊर्जा मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी को लगातार बढ़ा रहा है।

आंकड़े एक नज़र में:

- **कुल स्थापित बिजली क्षमता:** अक्टूबर 2026 में लगभग **560 GW**, जो 2014 में 249 GW थी।
- **गैर-जीवाश्म क्षमता:** 31 जुलाई 2026 तक **308 GW**, जो कुल स्थापित क्षमता का **55%** है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा की** स्थापित क्षमता में **भारत विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है।**
- भारत ने जुलाई 2024–जून 2026 के दौरान अपने नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में **63.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का निवेश किया।

भारत नवीकरणीय ऊर्जा शिखर सम्मेलन और एक्सपो (BRESE) 2026

निवेश करें। नवाचार करें। प्रेरित करें (Invest. Innovate. Inspire)

- **भारत नवीकरणीय ऊर्जा शिखर सम्मेलन और एक्सपो (BRESE) 2026** का आयोजन 2–5 नवंबर तक नई दिल्ली में किया गया। इस शिखर सम्मेलन ने **वैश्विक नीति निर्माताओं, निवेशकों, उद्योग जगत के नेताओं, निर्माताओं और नवप्रवर्तकों** को एक मंच पर लाया। ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, नॉर्वे, स्वीडन और यूनाइटेड किंगडम ने कंट्री पार्टनर (भागीदार देश) के रूप में भाग लिया। गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश सहित तेरह भारतीय राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता, निवेश के अवसरों और विनिर्माण क्षमताओं का प्रदर्शन किया। इस आयोजन में एक प्रदर्शनी भी शामिल थी जिसमें 400+ निर्माताओं, प्रौद्योगिकी प्रदाताओं, स्टार्टअप्स और अनुसंधान संस्थानों ने भाग लिया। चर्चाओं में **नवीकरणीय ऊर्जा वित्तपोषण, स्वच्छ ऊर्जा विनिर्माण, ऊर्जा भंडारण, उभरती प्रौद्योगिकियां और कार्यबल विकास** शामिल थे।

सौर ऊर्जा: क्षमता का विस्तार, अधिक से अधिक लोगों तक पहुंच

- भारत की **स्थापित सौर क्षमता** 2014 के 2.8 GW से बढ़कर **~175 GW** (31 अक्टूबर 2026 तक) हो गई है। सौर ऊर्जा अब भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का सबसे बड़ा घटक है। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा जोड़े गए **34 GW** की तुलना में **37 GW** से अधिक सौर क्षमता जोड़कर, **भारत 2025 में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सौर विकास बाजार बन गया।**



पीएम-सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना

- फरवरी 2024 में 1 करोड़ परिवारों के लिए ₹75,021 करोड़ के कुल परिव्यय के साथ शुरू की गई।
- देश भर में रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशन से अब **65.26 लाख परिवार** लाभान्वित हो रहे हैं (02.11.2026 तक)।
- लाभार्थियों को लगभग **₹35,800 करोड़ की सब्सिडी** हस्तांतरित की जा चुकी है।
- अक्टूबर, 2026 तक लगभग **21 लाख परिवारों** को शून्य बिजली बिल प्राप्त हुए हैं।
- योजना के तहत अब तक संचयी रूप से **19.1 GW रूफटॉप सोलर क्षमता चालू (कमीशन) की जा चुकी है।**

प्रधानमंत्री सूर्य सरोवर योजना

- सरकार ने **31 जुलाई 2026** को **₹5,070 करोड** के परिव्यय के साथ **प्रधानमंत्री सूर्य सरोवर योजना (PM-SSY)** को मंजूरी दी। यह **ऊर्जा भंडारण प्रणालियों के साथ फ्लोटिंग सोलर फोटोवोल्टिक परियोजनाओं (Floating Solar Photovoltaic Projects with Energy Storage Systems)** के विकास के साथ भारत के सौर विस्तार में एक नया आयाम जोड़ती है।
- **लक्ष्य:** 5,000 MW की फ्लोटिंग सोलर पीवी (PV) परियोजनाएं।
- न्यूनतम दो घंटे की अवधि के साथ सह-स्थित (co-located) भंडारण, जो **10,000 MWh** के बराबर है।
- परियोजनाओं को **वित्त वर्ष 2026–27 से वित्त वर्ष 2030–31** तक स्वीकृत किया जाएगा।

पवन ऊर्जा

- पवन ऊर्जा भारत के नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनी हुई है। भारत **स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता में विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर** है। इस क्षेत्र में मजबूत वार्षिक क्षमता वृद्धि और बढ़ता घरेलू विनिर्माण भी देखा जा रहा है।
- **स्थापित क्षमता: 29 अक्टूबर 2026 तक 59.20 GW।**
- भारत ने **वित्त वर्ष 2025–26 में 6.05 GW** जोड़ा, जो इसकी अब तक की सबसे अधिक वार्षिक पवन क्षमता वृद्धि है और वित्त वर्ष 2024–25 की तुलना में **46% अधिक** है।
- लगभग **28 GW** की अतिरिक्त पवन क्षमता कार्यान्वयन के अधीन है।
- पवन टरबाइन विनिर्माण क्षमता 2014 के 10 GW से बढ़कर लगभग **24 GW** (मार्च 2026) तक पहुंच गई। इस क्षेत्र ने प्रमुख घटकों में **70–80% स्वदेशीकरण** हासिल कर लिया है।
- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 19 जून 2024 को **1 GW की अपतटीय (ऑफशोर) पवन परियोजनाओं के लिए ₹7,453 करोड़ की VGF योजना** को मंजूरी दी।

जैव-ऊर्जा (बायो-एनर्जी)

- 29 अक्टूबर 2026 तक बायो-पावर क्षमता 11.75 GW है। CBG पारिस्थितिकी तंत्र का भी विस्तार हुआ है, जिसमें 02 नवंबर 2026 तक 839 CBG संयंत्र पंजीकृत हैं। इनमें से 210 चालू हो चुके हैं और 255 निर्माणाधीन हैं।
- **बायोमास सह-उत्पादन (cogeneration): 30 सितंबर 2026** तक खोई (bagasse) आधारित **9821.32 MW** और गैर-खोई (non-bagasse) आधारित **1047.85 MW** क्षमता।
- **अपशिष्ट से ऊर्जा (Waste-to-Energy):** 30 सितंबर 2026 तक, ग्रिड से जुड़ी अपशिष्ट-से-ऊर्जा क्षमता 324.24 MW थी। ऑफ-ग्रिड संयंत्रों ने अतिरिक्त 554.16 MW का योगदान दिया।
- **राष्ट्रीय बायोएनर्जी कार्यक्रम:** यह कार्यक्रम वित्तीय सहायता के माध्यम से **अपशिष्ट-से-ऊर्जा, बायोमास और बायोगैस परियोजनाओं** का समर्थन करता है। चरण-I में **₹858 करोड़** के परिव्यय के साथ **वित्त वर्ष 2021–22 से वित्त वर्ष 2025–26** को कवर किया गया।

गोबरधन (GOBARdhan): अपशिष्ट को ऊर्जा विकास में बदलना

- **गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज धन (GOBARdhan)– राष्ट्रीय सर्कुलर बायोएनर्जी योजना:** सरकार द्वारा **6 अगस्त 2026** को **वित्त वर्ष 2026–27 से वित्त वर्ष 2035–36** के लिए **₹23,731 करोड़** के परिव्यय के साथ स्वीकृत।
- इस योजना का उद्देश्य **घरेलू CBG उत्पादन को लगभग दस गुना करना** और एक राष्ट्रीय सर्कुलर बायोइकोनॉमी (जैव-अर्थव्यवस्था) बनाना है।

जलविद्युत (हाइड्रो)

- जलविद्युत नवीकरणीय बिजली का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना हुआ है, जो विश्वसनीय और लचीला बिजली उत्पादन प्रदान करता है। सौर और पवन क्षमता के विस्तार के साथ यह ग्रिड स्थिरता का भी समर्थन करता है। बड़ी और छोटी जलविद्युत परियोजनाओं सहित **जलविद्युत** की संचयी क्षमता **57.49 GW (29 अक्टूबर 2026 तक)** है।

लघु जलविद्युत विकास योजना

- सरकार ने मार्च 2026 में **वित्त वर्ष 2026–27 से वित्त वर्ष 2030–31** के लिए **₹2,584.60 करोड़** के परिव्यय के साथ **लघु जलविद्युत (SHP) विकास योजना** को मंजूरी दी है।
- इस योजना का उद्देश्य **1–25 MW** की परियोजनाओं के माध्यम से लगभग **1,500 MW** लघु जलविद्युत क्षमता जोड़ना है। यह विशेष रूप से **पहाड़ी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों** में परियोजनाओं का समर्थन करती है।

हरित हाइड्रोजन (Green Hydrogen)

- कठिन-से-कम होने वाले (hard-to-abate) क्षेत्रों के लिए हरित हाइड्रोजन एक स्वच्छ ईंधन विकल्प के रूप में उभरा है। यह ऊर्जा सुरक्षा और औद्योगिक विकास का भी समर्थन कर सकता है।

राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन:

- सरकार ने हरित हाइड्रोजन पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने और इस क्षेत्र में अवसरों तथा चुनौतियों के प्रति एक प्रणालीगत प्रतिक्रिया को उत्प्रेरित करने के लिए एक व्यापक कार्यक्रम के रूप में 2023 में **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन (NGHM)** शुरू किया।
- 2030 तक **5 MMT (मिलियन मीट्रिक टन)** हरित हाइड्रोजन उत्पादन के लक्ष्य के साथ, **₹19,744 करोड़** के परिव्यय के साथ जनवरी 2023 में स्वीकृत।
- भारतीय कंपनियों ने 2023 से अब तक **5.5 लाख MTPA** हरित हाइड्रोजन ऑफटेक (खरीद) प्रतिबद्धताओं पर हस्ताक्षर किए हैं, जो दुनिया की सबसे बड़ी आपूर्ति प्रतिबद्धता है।
- भारतीय कंपनियों ने 2026 में 18 नए ऑफटेक समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जो **4 लाख MTPA से अधिक** हरित हाइड्रोजन समतुल्य को कवर करते हैं।
- 2023 से अब तक की कुल 5.5 लाख MTPA ऑफटेक प्रतिबद्धताओं में से **70% से अधिक** निर्यात के लिए निर्धारित हैं।
- हरित हाइड्रोजन परियोजनाओं से लगभग **₹90,000 करोड़** (9.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर) का निवेश आकर्षित होने की उम्मीद है।
- **उत्पादन क्षमता: फरवरी 2026** तक लगभग **8,000 टन प्रति वर्ष** हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता चालू की जा चुकी थी।
- **परिवहन:** जुलाई 2026 में, सरकार ने मिशन के तहत **21 मार्गों पर 70 हाइड्रोजन-संचालित वाहनों** के लिए **12 पायलट परियोजनाएं** शुरू कीं।
- भारत की पहली स्वदेशी **हाइड्रोजन फ्यूल सेल-संचालित ट्रेन** ने जुलाई 2026 में जींद–सोनीपत खंड पर परिचालन शुरू किया।

भू-तापीय ऊर्जा (Geo Thermal)

- भू-तापीय ऊर्जा एक विश्वसनीय नवीकरणीय स्रोत प्रदान करती है जो सौर और पवन जैसे परिवर्तनशील स्रोतों की पूरक बन सकती है। भू-तापीय ऊर्जा बिजली उत्पन्न करने या सीधे ताप प्रदान करने के लिए पृथ्वी के भीतर संग्रहीत ऊष्मा का उपयोग करती है।

भू-तापीय ऊर्जा पर राष्ट्रीय नीति (15 सितंबर 2025 को अधिसूचित)

- यह नीति भू-तापीय संसाधनों के अन्वेषण, विकास और उपयोग के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।
- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (Geological Survey of India) ने **381 गर्म जल के स्रोतों (हॉट स्प्रिंग्स)** में किए गए अन्वेषण के आधार पर **भारत की भू-तापीय क्षमता का अनुमान लगभग 10,600 MW** लगाया है, जिसमें **42 भू-तापीय स्थलों** को आशाजनक क्षेत्रों के रूप में पहचाना गया है।
- यह नीति प्रौद्योगिकी साझेदारी, ज्ञान हस्तांतरण और संयुक्त अनुसंधान एवं विकास (R&D) को बढ़ावा देती है। भू-तापीय ऊर्जा के लिए भारत के ऑस्ट्रेलिया, आइसलैंड, सऊदी अरब और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सहयोग तंत्र हैं।
- **जुलाई–अगस्त 2025 के दौरान पांच परियोजनाएं स्वीकृत की गईं**, जिनमें एक **पायलट उत्पादन संयंत्र, संसाधन मूल्यांकन परियोजनाएं और एक सौर–भू-तापीय हाइब्रिड संयंत्र** शामिल हैं। इनका उद्देश्य भू-तापीय अनुप्रयोगों की **तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता (techno-economic viability)** स्थापित करना है।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: भारत की नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा परिदृश्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अक्टूबर 2026 तक देश की कुल स्थापित बिजली क्षमता लगभग 560 गीगावाट (GW) तक पहुँच चुकी है।
2. 31 जुलाई 2026 तक देश की गैर-जीवाश्म क्षमता कुल स्थापित क्षमता के 55% से अधिक हो चुकी है।
3. नवीकरणीय ऊर्जा की स्थापित क्षमता के मामले में वर्तमान में भारत विश्व स्तर पर तीसरे स्थान पर है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- *"भारत का नवीकरणीय ऊर्जा परिदृश्य वैश्विक मंच पर एक मजबूत और स्वच्छ भविष्य की ओर तेजी से अग्रसर है।"* इस कथन के आलोक में, भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में हुई प्रगति का परीक्षण कीजिए और इस क्षेत्र के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों व उनके समाधान पर चर्चा कीजिए। *(उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए)*

Farmer's Welfare

रबी 2026-27 के लिए पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरें

प्रविष्टि तिथि: 12 NOV 2026 19:05 PM

सस्ती उर्वरक की उपलब्धता सुनिश्चित करना और संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग को बढ़ावा देना

पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना: संतुलित उर्वरीकरण को बढ़ावा देना

संतुलित उर्वरक का उपयोग मिट्टी की सेहत (उपजाऊपन) को संरक्षित करने, कृषि उत्पादकता बढ़ाने और खेती की दीर्घकालिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे बढ़ावा देने के लिए, सरकार **01 अप्रैल 2010 से पोषक** तत्व-आधारित सब्सिडी (एनबीएस) योजना चला रही है।

इस योजना के तहत, **उर्वरक सब्सिडी** को उनकी पोषक तत्व सामग्री **से जोड़ा गया है**। इन पोषक तत्वों में **नाइट्रोजन (एन), फास्फोरस (पी), पोटेशियम (के) और सल्फर (एस) शामिल हैं।** इन पोषक तत्वों के लिए सब्सिडी दरें खरीफ और रबी सीजन के लिए वर्ष में दो बार निर्धारित की जाती हैं, जिसमें **फॉस्फेटिक और पोटाश (पीएंडके) उर्वरकों के 28 ग्रेड** शामिल हैं।

यह दृष्टिकोण किसानों को सस्ती कीमतों पर प्रमुख पोषक तत्वों तक पहुंचने में **सहायता करके उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने में मदद करता है।** यह किसानों को उनकी **मिट्टी और फसल की जरूरतों** के अनुसार संतुलित अनुपात में **पोषक तत्वों का उपयोग करने के लिए भी** प्रोत्साहित करता है।

पीएंडके उर्वरक क्षेत्र एक नियंत्रणमुक्त व्यवस्था के तहत काम करता है। निर्माता और आयातक सरकारी निगरानी के अधीन उचित स्तर पर अधिकतम खुदरा मूल्य (एमआरपी) निर्धारित कर सकते हैं। इसलिए, किसानों को इन उर्वरकों की खरीद पर सीधे सब्सिडी का लाभ मिलता है।

रबी 2026-27 के लिए एनबीएस दरें

- उर्वरकों और कृषि सामग्रियों की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में हाल के रुझानों को देखते हुए, सरकार ने **11 नवंबर 2026 को रबी 2026-27 के लिए फॉस्फेटिक और पोटाश (पीएंडके) उर्वरकों के लिए पोषक तत्व-आधारित सब्सिडी (एनबीएस) दरों** को मंजूरी दी। दरें 1 अक्टूबर 2026 से 31 मार्च 2027 तक लागू हैं।
- **रबी 2026-27 के लिए अस्थायी परिव्यय लगभग 62,370.02 करोड़ रुपये** है। यह **रबी 2025-26 के लिए आवंटित 37,952.29 करोड़ रुपये से 64 प्रतिशत अधिक है।** इस योजना के तहत, उर्वरक कंपनियों को सरकार से अनुमोदित और अधिसूचित दरों पर सब्सिडी प्राप्त होती है, जिसका विवरण नीचे दिया गया है:

पोषक तत्व	एन	पी	के	एस
रबी 2026-27 (रुपए/किग्रा)	94.21	66.11	2.38	10.42

- सब्सिडी सहायता यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरक उपलब्ध रहें।
- इसके अलावा, सरकार ने **प्रमुख उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और घरेलू उत्पादन का समर्थन करने के लिए** विशेष प्रावधान भी जारी रखे हैं। इसमे शामिल है:

1. डाई-अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) के लिए विशेष प्रावधान

- सरकार नियमित एनबीएस सब्सिडी से परे **1,350 रुपए प्रति बैग की निश्चित कीमत पर डीएपी की उपलब्धता** सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रावधान जारी रखेगी। **इन प्रावधानों को आयातित और घरेलू ट्रिपल सुपरफॉस्फेट (टीएसपी) और आयातित मोनोअमोनियम फॉस्फेट (एमएपी) तक भी बढ़ाया गया है।**

2. सिंगल सुपरफॉस्फेट (एसएसपी) के लिए माल ढुलाई सब्सिडी

- सरकार रबी 2026-27 के दौरान, **एसएसपी के लिए माल ढुलाई सब्सिडी** जारी रखेगी। इसका उद्देश्य डाई-अमोनियम फॉस्फेट के किफायती विकल्प के रूप में सिंगल सुपरफॉस्फेट को बढ़ावा देना है।

3. अमोनियम सल्फेट के लिए सब्सिडी

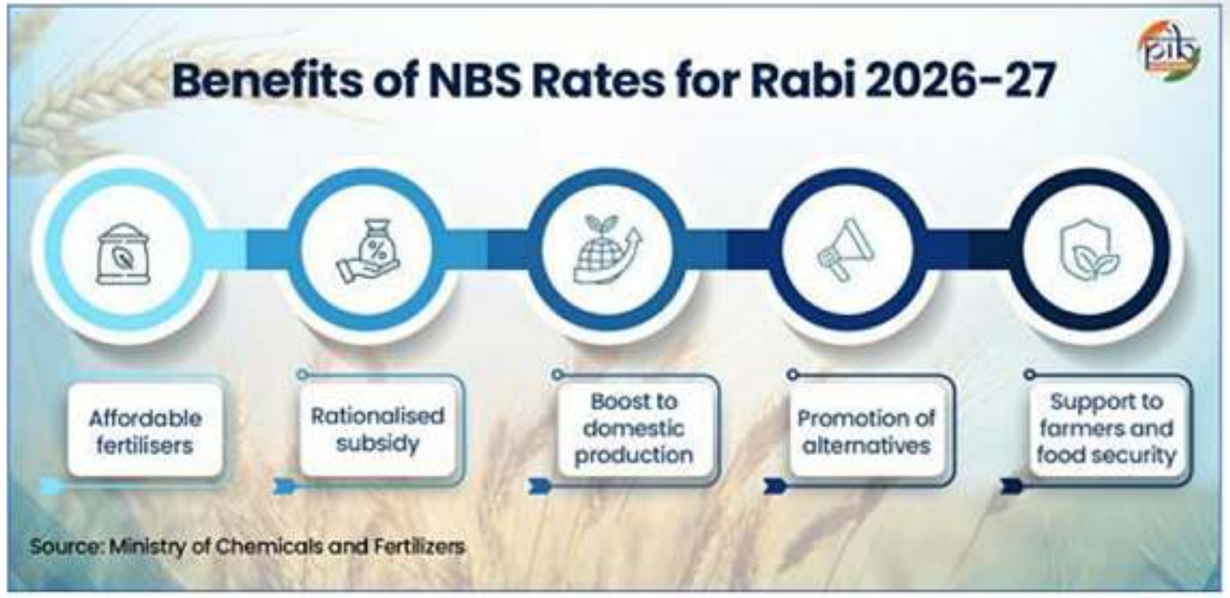
- **आयातित और घरेलू स्तर पर उत्पादित अमोनियम सल्फेट** पर सब्सिडी रबी 2026-27 के दौरान जारी रहेगी।

4. घरेलू उत्पादन के लिए सल्फर पैकेज

- सल्फर पैकेज विशेष रूप से **सल्फर और सल्फ्यूरिक एसिड के घरेलू निर्माताओं** को सहायता प्रदान करता है। पैकेज के तहत:
- सल्फर: निर्माताओं को **वास्तविक खरीद लागत का 20 प्रतिशत प्राप्त होता है**, जो **800 अमरीकी डालर प्रति टन के न्यूनतम मूल्य के अधीन होता है।**
- सल्फ्यूरिक एसिड: निर्माताओं को **वास्तविक खरीद लागत का 20 प्रतिशत** प्राप्त होता है, जो **266.67 अमेरिकी डॉलर प्रति टन के न्यूनतम मूल्य के अधीन होता है।**

रबी 2026-27 के लिए एनबीएस दरों के मुख्य लाभ

- रबी 2026-27 के लिए संशोधित एनबीएस दरें और विशेष प्रावधान किसानों और घरेलू उत्पादन का समर्थन करते हुए सस्ती उर्वरक उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं। एनबीएस दरों के प्रमुख लाभों में शामिल हैं:
- **किफायती उर्वरक:** किसानों को रियायती और उचित मूल्य पर उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है।
- **युक्तिसंगत सब्सिडी:** पीएंडके उर्वरक सब्सिडी को अंतरराष्ट्रीय उर्वरक और कृषि सामग्री कीमतों में हाल के रुझानों के अनुरूप बनाती है।
- **घरेलू उत्पादन को बढ़ावा:** घरेलू उर्वरक उत्पादन का समर्थन करती है और आयात पर निर्भरता कम करने में मदद करती है।
- **विकल्पों को बढ़ावा देना:** डाई-अमोनियम फॉस्फेट के लिए सिंगल सुपरफॉस्फेट और यूरिया के लिए अमोनियम सल्फेट जैसे किफायती विकल्पों को प्रोत्साहित करती है। यह पोषक तत्वों के संतुलित उपयोग को भी बढ़ावा देती है।
- **किसानों और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना:** रबी सीजन के माध्यम से इनपुट लागत को स्थिर रखकर खाद्य सुरक्षा और कृषि आय का समर्थन करते हुए सरकार के किसान-प्रथम दृष्टिकोण को मजबूत करती है।



एनबीएस योजना के तहत प्रगति

- एनबीएस योजना का प्रभाव देश भर में **उर्वरक सब्सिडी सहायता में वृद्धि और बेहतर स्टॉक** उपलब्धता में दिखता है।

उर्वरक सब्सिडी संवितरण

- 2022-23 और 2025-26 के बीच, सरकार ने पोषक तत्व-आधारित सब्सिडी (एनबीएस) योजना के तहत स्वदेशी और आयातित फॉस्फेटिक और पोटाश (पीएंडके) उर्वरकों के लिए **सब्सिडी में 2.79 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वितरण** किया।

उर्वरक स्टॉक उपलब्धता

- प्रमुख उर्वरकों का कुल स्टॉक **10 नवंबर 2025 को 173.46 लाख टन से बढ़कर 10 नवंबर 2026 को 235.21 लाख टन** हो गया। यह **पिछले वर्ष की तुलना में** लगभग 35.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।

उत्पाद	**10.11.2025 तक स्टॉक** (लाख टन में)	**10.11.2026 तक स्टॉक** (लाख टन में)
यूरिया	72.14	103.12
डीएपी	24.86	28.65
एनपीके	42.44	60.87
एमओपी	10.78	20.08
एसएसपी	23.24	22.49
कुल स्टॉक	**173.46**	**235.21**

किसानों और टिकाऊ कृषि के लिए निरंतर प्रतिबद्धता

- पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना संतुलित उर्वरक को बढ़ावा देने और किसानों के लिए सस्ती पोषक तत्वों की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रबी 2026-27 सब्सिडी दरें, निरंतर विशेष प्रावधानों के साथ, उर्वरक उपलब्धता, घरेलू उत्पादन और किफायती विकल्पों का समर्थन करती हैं। सब्सिडी वितरण में वृद्धि और उर्वरक का उच्च स्टॉक सरकार के निरंतर प्रयासों को दर्शाता है। साथ में, ये उपाय सस्ती उर्वरक उपलब्धता, संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग और कृषि सामग्री लागत में अधिक स्थिरता को बढ़ावा देकर किसानों की मदद करते हैं।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: पोषक तत्व आधारित सब्सिडी (NBS) योजना के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इस योजना को सरकार द्वारा 01 अप्रैल 2010 से लागू किया गया है।
2. इसके तहत नाइट्रोजन (N), फॉस्फोरस (P), पोटाश (K) और सल्फर (S) जैसे पोषक तत्वों के लिए सब्सिडी दरें निर्धारित की जाती हैं।
3. फॉस्फेटिक और पोटाश (पीएंडके) उर्वरक क्षेत्र एक पूर्णतः नियंत्रित व्यवस्था के तहत काम करता है जहाँ सरकार द्वारा खुदरा मूल्य (MRP) तय किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- *"भारत में उर्वरक सब्सिडी व्यवस्था में 'पोषक तत्व आधारित सब्सिडी' (NBS) की भूमिका का परीक्षण कीजिए। यह योजना कृषि की दीर्घकालिक निरंतरता को बनाए रखने और संतुलित उर्वरक के उपयोग को बढ़ावा देने में कहाँ तक सफल रही है? चर्चा कीजिए।"*
- *(उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए)*

The challenge of holding the Quad together



Harsh V. Pant

is Vice-President, Observer Research Foundation, New Delhi



Sayantan Haldar

is Associate Fellow, Maritime Studies, Observer Research Foundation, New Delhi

Speaking to the media on the sidelines of the G20 Foreign Ministers' Meeting in Atlanta, the U.S. Secretary of State announced that the leaders of the four Quad countries – India, Australia, Japan and the U.S. – are expected to meet in Manila in November, on the sidelines of the ASEAN Summit. The announcement is significant as this would be the first summit-level meeting of the Quad leaders since Donald Trump began his second term as U.S. President. It would also be the first such summit attended by Japanese Prime Minister Sanae Takaichi since she assumed office. The last Quad Leaders' Summit was held in Wilmington in 2024, when Joe Biden was U.S. President and Fumio Kishida was Japan's Prime Minister.

While India was expected to host the subsequent Quad Leaders' Summit, the grouping underwent a period of intense strategic turbulence in 2025, on account of Washington's shifting geopolitical priorities and changing political dynamics in its bilateral relations with Quad members, especially India. However, this did not result in complete collapse of the grouping. Apart from the leader-level summit, the group has remained successful in continuing its operational synergies in its various initiatives. This was most evident in the elevation of the Quad's Indo-Pacific Maritime Domain Awareness initiative to the Indo-Pacific Maritime Surveillance Collaboration framework, launched in New Delhi in May 2026, following the Quad Foreign Ministers' Meeting.

Keeping the Quad afloat

Additionally, the foreign ministers of the four Quad countries held multiple meetings across 2025 and 2026, a period characterised as the nadir of the group's political alignment. In 2025, the foreign ministers met twice in Washington, with the first meeting marking Marco Rubio's first engagement as U.S. Secretary of State. In 2026, they met three times, in New Delhi, Manila, and Atlanta. A natural priority area for the agenda of these meetings was to schedule a leader-level summit for the group. For a grouping of this nature, which has neither a permanent bureaucracy nor an institutional framework of its own, such summits serve as crucial platforms to reaffirm its shared purpose and chart its agenda for the months ahead.

The big ticket question confronting the Quad, however, is how President Trump engages with the group and the broader Indo-Pacific geography. This, in many ways, is going to be the first occasion where Mr. Trump could articulate his vision and outlook towards the region for the remainder of this term. It was during his first tenure in the White House that the Quad was revived in 2017, and the Quad bolstered its approach towards the Indo-Pacific by renaming the U.S. Pacific Command to U.S. Indo-Pacific Command. However, since beginning his second term, Mr. Trump's priorities have been dictated by the ongoing Russia-Ukraine war, Washington's approach towards the transatlantic relationship and NATO, and the war in West Asia. Although the U.S. has not publicly expressed disinterest in the Indo-Pacific, regional partners have remained cautious about the possibility of a fundamental shift in Washington's engagement with the region.

President Trump's insistence that the U.S. expects its partners to enhance burden-sharing within the transatlantic security architecture it is invested in has also caused concern in the Indo-Pacific. The U.S. continues to remain a significant security actor in the region, especially in the Pacific, with several like-minded countries embedded in the U.S.-led security architecture. Furthermore, the White House's decision to review AUKUS has heightened concern and uncertainty among other players in the Indo-Pacific. This has prompted various countries to undertake measures to diversify their security policies. For example, Japan, through its One Cooperative Effort Among Nations (OCEAN) framework, has sought to increasingly reshape its post-war security posture by deepening strategic alignment with partner countries. Australia has made efforts to strengthen defence partnerships with India, Japan, Southeast Asian countries, and Pacific Island countries to deter China's growing footprint in the region. India continues to pursue a policy of multi-alignment and diversification of defence and strategic ties with like-minded countries in the Indian Ocean and the wider Indo-Pacific.

The recent meeting between the Defence Ministers of JAI (Japan-Australia-India) in Cebu also signals a willingness among these countries to further deepen their partnership notwithstanding the nature and character of Washington's role in the region. New entrants in the Indo-Pacific strategic landscape, such as France, have also sought to bolster ties with regional countries to sustain a balanced security environment in the region. Even though Mr. Trump's actions have spurred a rethink on the changing security order in the Indo-Pacific among regional partners, Washington's role remains critical, especially in the face of a worsening maritime security environment prompted by continued expansion of China's footprint. Washington's role in safeguarding the Taiwan Strait, a critical flashpoint in the Indo-Pacific strategic geography, remains significant.

The big ticket question confronting the Quad, however, is how Donald Trump engages with the group and the broader Indo-Pacific geography

A strategic message from Manila

While questions remain about the nature and character of U.S. involvement in the Indo-Pacific, at least for the remainder of President Trump's tenure in White House, the announcement of the imminent leader-level summit of the Quad appears to have breathed new life into the group. Even though India was expected to host the next leader-level summit following the previous meeting in Wilmington in 2024, the Philippines' hosting of the summit also reinforces one of the group's foundational strategic pillars – ASEAN centrality. Arguably, the Philippines remains at the front and centre of Chinese misadventures in the Indo-Pacific, with ongoing tussles over sovereignty issues between Manila and Beijing.

Following the Quad's track record at previous leader-level summits, its leaders are expected to reiterate the importance of respecting sovereignty in the South and East China Seas and condemn attempts by powers to disregard international law in the region. Delivering such a message from Manila would carry the weight of strategic symbolism. For Mr. Trump, the objectives of this Indo-Pacific visit should be dictated by two priorities: resetting American posture in the region and helping assert the Quad's commitment against Chinese belligerence from Manila.

YouTube Homework

- BRICS
- SCO
- G-7

क्वाड को एकजुट रखने की चुनौती

- अटलांटा में जी-20 विदेश मंत्रियों की बैठक से इतर मीडिया से बात करते हुए अमेरिकी विदेश मंत्री ने घोषणा की कि चारों क्वाड देशों—भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका—के नेताओं के नवंबर में आसियान (ASEAN) शिखर सम्मेलन से इतर मनीला में मिलने की उम्मीद है।
- यह घोषणा महत्वपूर्ण है क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत के बाद से यह क्वाड नेताओं की पहली शिखर-स्तरीय बैठक होगी।
- जापानी प्रधानमंत्री साने ताकाइची के पदभार संभालने के बाद से भी यह इस तरह का पहला शिखर सम्मेलन होगा।
- पिछला क्वाड लीडर्स समिट 2024 में विलमिंगटन में आयोजित किया गया था, जब जो बाइडेन अमेरिकी राष्ट्रपति थे और फुमियो किशिदा जापान के प्रधानमंत्री थे।
- हालांकि अगला क्वाड लीडर्स समिट भारत में आयोजित होने की उम्मीद थी, लेकिन वाशिंगटन की बदलती भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं और क्वाड सदस्यों, विशेष रूप से भारत के साथ इसके द्विपक्षीय संबंधों में बदलते राजनीतिक समीकरणों के कारण यह समूह 2025 में तीव्र रणनीतिक उथल-पुथल के दौर से गुजरा।
- हालांकि, इसके परिणामस्वरूप समूह पूरी तरह से विफल नहीं हुआ। शिखर सम्मेलन के अलावा, यह समूह अपनी विभिन्न पहलों में परिचालन तालमेल जारी रखने में सफल रहा है।
- यह मई 2026 में क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक के बाद नई दिल्ली में शुरू किए गए 'इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम सर्विलांस कोलाबोरेशन' (हिंद-प्रशांत समुद्री निगरानी सहयोग) ढांचे के रूप में क्वाड की 'इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस' पहल के उन्नयन में सबसे स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

क्वाड को बनाए रखना

- इसके अतिरिक्त, चारों क्वाड देशों के विदेश मंत्रियों ने 2025 और 2026 के दौरान कई बैठकें कीं—एक ऐसा दौर जिसे समूह के राजनीतिक संरेखण (तालमेल) के सबसे निचले स्तर के रूप में देखा गया।
- 2025 में, विदेश मंत्रियों ने वाशिंगटन में दो बार मुलाकात की, जिसमें पहली बैठक अमेरिकी विदेश मंत्री के रूप में मार्को रुबियो की पहली सहभागिता थी।
- 2026 में, उन्होंने नई दिल्ली, मनीला और अटलांटा में तीन बार मुलाकात की। इन बैठकों के एजेंडे के लिए एक स्वाभाविक प्राथमिकता समूह के लिए एक नेता-स्तरीय शिखर सम्मेलन निर्धारित करना था।
- इस प्रकृति के समूह के लिए, जिसके पास न तो कोई स्थायी नौकरशाही है और न ही अपना कोई संस्थागत ढांचा है, इस तरह के शिखर सम्मेलन अपने साझा उद्देश्य की पुष्टि करने और आगामी महीनों के लिए अपना एजेंडा तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम करते हैं।

- हालांकि, क्वाड के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि राष्ट्रपति ट्रंप इस समूह और व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साथ किस तरह जुड़ते हैं। कई मायनों में, यह पहला अवसर होने जा रहा है जब श्री ट्रंप शेष कार्यकाल के लिए इस क्षेत्र के प्रति अपने दृष्टिकोण और नजरिए को स्पष्ट कर सकते हैं।
- व्हाइट हाउस में उनके पहले कार्यकाल के दौरान ही 2017 में क्वाड को पुनर्जीवित किया गया था, और अमेरिकी पैसिफिक कमांड का नाम बदलकर यू.एस. इंडो-पैसिफिक कमांड करके हिंद-प्रशांत के प्रति क्वाड के दृष्टिकोण को मजबूत किया गया था।
- हालांकि, अपना दूसरा कार्यकाल शुरू करने के बाद से, श्री ट्रंप की प्राथमिकताएं चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध, ट्रांसअटलांटिक संबंधों और नाटो (NATO) के प्रति वाशिंगटन के दृष्टिकोण और पश्चिम एशिया में युद्ध से तय हुई हैं। यद्यपि अमेरिका ने सार्वजनिक रूप से हिंद-प्रशांत में अरुचि व्यक्त नहीं की है, फिर भी क्षेत्रीय साझेदार इस क्षेत्र के साथ वाशिंगटन के जुड़ाव में बुनियादी बदलाव की संभावना को लेकर सतर्क रहे हैं।
- राष्ट्रपति ट्रंप के इस आग्रह ने कि अमेरिका अपने साझेदारों से ट्रांसअटलांटिक सुरक्षा ढांचे के भीतर बोझ-साझाकरण (जिम्मेदारी बांटने) को बढ़ाने की उम्मीद करता है, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी चिंता पैदा कर दी है।
- अमेरिका इस क्षेत्र में, विशेष रूप से प्रशांत क्षेत्र में, एक महत्वपूर्ण सुरक्षा खिलाड़ी बना हुआ है, जहाँ कई समान विचारधारा वाले देश अमेरिका के नेतृत्व वाले सुरक्षा ढांचे से जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, व्हाइट हाउस के ऑकस (AUKUS) की समीक्षा करने के फैसले ने हिंद-प्रशांत के अन्य देशों के बीच चिंता और अनिश्चितता को बढ़ा दिया है।
- इसने विभिन्न देशों को अपनी सुरक्षा नीतियों में विविधता लाने के उपाय करने के लिए प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए, जापान ने अपने 'वन कोऑपरेटिव एफर्ट अमंग नेशंस' (OCEAN) ढांचे के माध्यम से साझेदार देशों के साथ रणनीतिक संरेखण को गहरा करके अपनी युद्धोत्तर सुरक्षा मुद्रा को तेजी से नया रूप देने की कोशिश की है।
- ऑस्ट्रेलिया ने इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए भारत, जापान, दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और प्रशांत द्वीप देशों के साथ रक्षा साझेदारी को मजबूत करने के प्रयास किए हैं।
- भारत हिंद महासागर और व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ बहु-संरेखण (multi-alignment) और रक्षा व रणनीतिक संबंधों में विविधता लाने की नीति को जारी रखे हुए है।

- हाल ही में सेबू (Cebu) में जेएआई (जापान-ऑस्ट्रेलिया-भारत) के रक्षा मंत्रियों की बैठक भी इस क्षेत्र में वाशिंगटन की भूमिका की प्रकृति और चरित्र के बावजूद, अपनी साझेदारी को और गहरा करने के लिए इन देशों की इच्छा का संकेत देती है।
- हिंद-प्रशांत रणनीतिक परिदृश्य में नए प्रवेशकों, जैसे कि फ्रांस, ने भी क्षेत्र में एक संतुलित सुरक्षा वातावरण बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने की कोशिश की है।
- भले ही श्री ट्रंप के कार्यों ने क्षेत्रीय साझेदारों के बीच हिंद-प्रशांत में बदलती सुरक्षा व्यवस्था पर पुनर्विचार को प्रेरित किया है, लेकिन वाशिंगटन की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है, विशेष रूप से चीन के पदचिह्नों के निरंतर विस्तार के कारण बिगड़ते समुद्री सुरक्षा वातावरण के मद्देनजर।
- ताइवान जलडमरूमध्य, जो हिंद-प्रशांत रणनीतिक भूगोल में एक महत्वपूर्ण संवेदनशील बिंदु है, की सुरक्षा में वाशिंगटन की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।

मनीला से एक रणनीतिक संदेश

- हालांकि व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति ट्रंप के शेष कार्यकाल के दौरान कम से कम हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी भागीदारी की प्रकृति और चरित्र को लेकर सवाल बने हुए हैं, लेकिन क्वाड के आसन्न नेता-स्तरीय शिखर सम्मेलन की घोषणा ने इस समूह में नई जान फूंक दी है।
- भले ही 2024 में विलमिंगटन में हुई पिछली बैठक के बाद भारत से अगले नेता-स्तरीय शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने की उम्मीद थी, लेकिन फिलीपींस द्वारा शिखर सम्मेलन की मेजबानी करना भी समूह के मूलभूत रणनीतिक स्तंभों में से एक—आसियान की केंद्रीयता (ASEAN centrality)—को मजबूत करता है।
- यकीनन, मनीला और बीजिंग के बीच संप्रभुता के मुद्दों पर चल रही खींचतान के साथ, फिलीपींस हिंद-प्रशांत में चीनी दुस्साहस के मोर्चे और केंद्र में बना हुआ है।
- पिछले नेता-स्तरीय शिखर सम्मेलनों में क्वाड के ट्रैक रिकॉर्ड का अनुसरण करते हुए, इसके नेताओं से दक्षिण और पूर्वी चीन सागर में संप्रभुता का सम्मान करने के महत्व को दोहराने और क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय कानून की अवहेलना करने के शक्तियों के प्रयासों की निंदा करने की उम्मीद है।
- मनीला से ऐसा संदेश देने में रणनीतिक प्रतीकात्मकता का वजन होगा। श्री ट्रंप के लिए, इस हिंद-प्रशांत यात्रा के उद्देश्य दो प्राथमिकताओं से तय होने चाहिए: क्षेत्र में अमेरिकी रुख को फिर से स्थापित करना और मनीला से चीनी आक्रामकता के खिलाफ क्वाड की प्रतिबद्धता को मजबूत करने में मदद करना।

प्रारंभिक परीक्षा (Prelims) के लिए अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: हिंद-प्रशांत क्षेत्र और 'क्वाड' (Quad) समूह की हालिया पहलों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. क्वाड के पास एक स्थायी सचिवालय और औपचारिक संस्थागत ढांचा मौजूद है जो इसके सदस्यों के बीच परिचालन तालमेल सुनिश्चित करता है।
2. 'इंडो-पैसिफिक मैरीटाइम सर्विलांस कोलाबोरेशन' (हिंद-प्रशांत समुद्री निगरानी सहयोग) ढांचा क्वाड की समुद्री सुरक्षा से जुड़ी एक पहल है।
3. 'आसियान की केंद्रीयता' (ASEAN centrality) क्वाड समूह के मूलभूत रणनीतिक स्तंभों में से एक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 3
- (d) 1, 2 और 3

मुख्य परीक्षा (Mains) के लिए अभ्यास प्रश्न

- *"वाशिंगटन की बदलती भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उभरती सुरक्षा अनिश्चितताओं के बीच क्वाड (Quad) की प्रासंगिकता और एकजुटता की परीक्षा हो रही है।"* इस कथन के संदर्भ में, क्वाड के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए तथा यह भी चर्चा कीजिए कि भारत अपनी 'बहु-संरेखण' (Multi-alignment) की नीति के माध्यम से हिंद-प्रशांत में अपने रणनीतिक हितों को कैसे सुरक्षित कर रहा है।
- *(उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए)*

महत्वपूर्ण तथ्य

U.S. assures India of tariff edge over competitors

- Both sides working to conclude interim trade agreement by financial year-end, say officials
- 'Much progress on finalising the deal's text was made when U.S. team visited India this month'
- New Delhi has repeatedly insisted on comparative edge as per Trump-Modi statement in February

T.C.A. Sharad Raghavan
NEW DELHI

In a significant breakthrough towards the conclusion of the India-U.S. interim trade deal, the U.S. has assured India of a comparative advantage over its competitors once it finalises its tariff structure, a senior official in the Commerce and Industry Ministry said, adding that both sides were working to complete the deal by the end of the current financial year.

Officials in New Delhi have repeatedly said that India would move ahead with the deal only if it was assured of a comparative advantage, as was agreed to in the February 2026 joint statement between Prime Minister Narendra Modi and U.S. President Donald Trump.

A big deal

"Talks between India and the U.S. are ongoing and the U.S. has assured us of a comparative advantage over our competitor countries," the senior official said on the condition of anonymity as the details of the bilateral discussions have not yet been made public.

This is a significant development because officials, including Commerce Minister Piyush Goyal, have repeatedly said that India would move ahead with a deal with the U.S. only if it is assured of a comparative advantage over its competitors.

Separately, Commerce Secretary Rajesh Agrawal confirmed that a two-man team from the U.S. visited India earlier this month during which substantial progress was made towards finalising the text of the deal. The February joint statement stated that the U.S. and India "commit to provide each other preferential market access in sectors of respective interest on a sustained basis".

However, since then, the U.S. has imposed additional 10% 'forced labour' tariffs on India, the same as on some of its competitors such as Indonesia, Malaysia, Pakistan, and Sri Lanka.

It is also currently conducting another investigation into India and several other countries related to excess capacity, which could see additional tariffs being levied.

'Unusual clause'

The official, however, said the U.S. assurance of comparative advantage for India takes into account this future tariff.

"The attempt by both sides is to complete the deal by the end of this financial year," the official added. "We have also agreed to a clause that says that if either country changes its tariffs on the other country, then the second country can also modify its commitments under the deal. This was also a part of the February joint statement," the official said.

The official added that such a clause is "not usual" in trade deals that India enters into, but that it had specifically been included in the deal with the U.S.

Separately, Mr. Agrawal said that the talks between the two sides were "on the right track" and that the teams are engaged both in-person and virtually.

"There was a small team from the U.S. that visited India for discussions on customs and trade facilitation in the first week of November," he said. "The discussions went off in a very positive direction. A lot of issues were closed, and there was convergence in a lot of areas."

In addition, he said that the chief negotiators of both sides regularly speak with each other virtually to carry forward the discussions and "iron out some of the language issues or some of the small issues that remain in the agreement".

Deal dynamics

PM Narendra Modi and U.S. President Donald Trump had reached a joint statement 'on reciprocal preferential market access' earlier

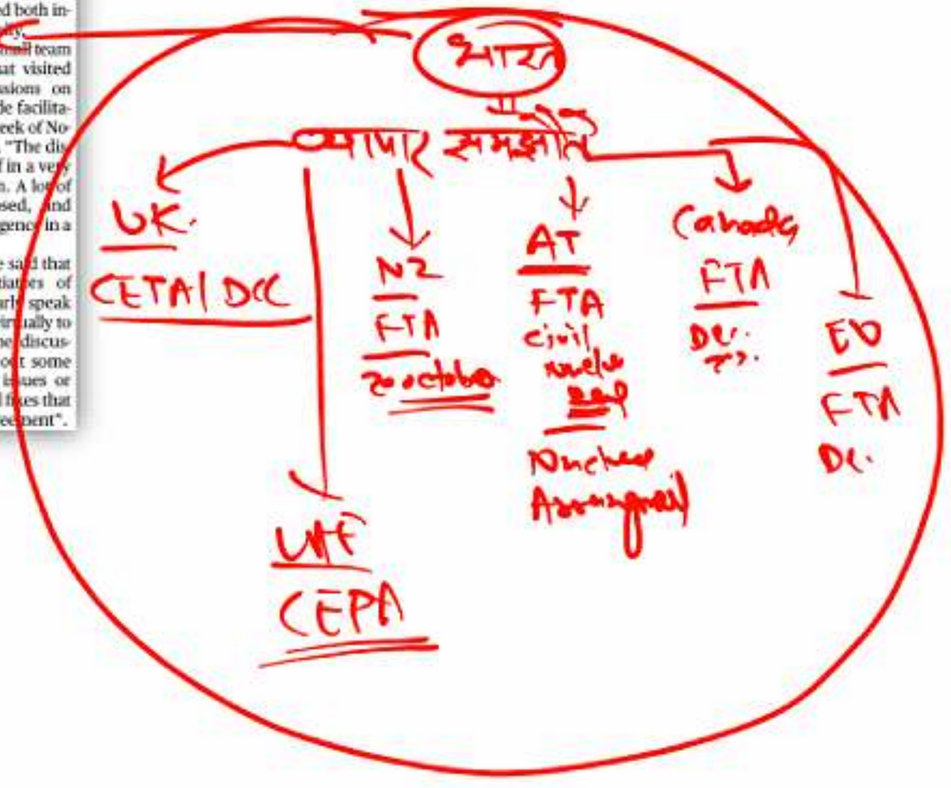
- U.S. assures India tariff advantage over competitors, a key demand by India
- U.S. still needs to complete an 'excess capacity' investigation that could bring additional tariffs
- The assurance includes future tariffs arising from probe findings
- Aim is to complete the deal by the end of this financial year
- Recent meeting in Delhi was key in concluding several aspects of the deal



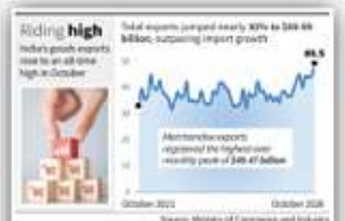
BTA
India-USA

YouTube Homework

- FTA with Other Countries



महत्वपूर्ण तथ्य



Exports touch record high as diversification pays off in October

T.C.A. Sharad Raghavan
NEW DELHI

India's merchandise exports rose to an all-time high of $49.5 billion in October 2026, bringing down the country's overall trade deficit, official data released on Friday showed.

While a large part of this growth was due to petroleum products, Commerce Secretary Rajesh Agrawal said diversification of exports to various locations helped improve the numbers.

India's total exports, including goods and services, stood at $89.99 billion in October 2026, up nearly [illegible] from last October. The overall trade deficit shrank from $25.[illegible] billion last October to $20.1 billion year-on-year.

"In the month of October, merchandise exports have registered a new peak of $49.47 billion," Mr. Agrawal said. "This is the highest-ever monthly merchandise export value, along with the highest monthly growth of 45.03% in the last five years."

Merchandise imports rose to a record high of $89.35 billion in October 2026, up 16.5% YoY. Total imports stood at $880.1 billion, a 16.6% increase.

According to trade experts, goods exports growing faster than merchandise imports shows that while the rise in global prices contributed to the increase in the value of India's exports, there was also an increase in the underlying export volumes.

"The particularly encouraging part of this growth is that this is not in any particular sector, this is not in any particular geography, it is broad based across countries and regions," Mr. Agrawal added. "43 of our 50 top export destinations posted positive growth in October this year as compared to 2025."

The data show that India's exports to 12 out of its top 20 export destinations grew by double digits or more. One of the key areas of diversification has been the African continent, with exports to that region growing 44% in April-September 2026 to $31.4 billion.

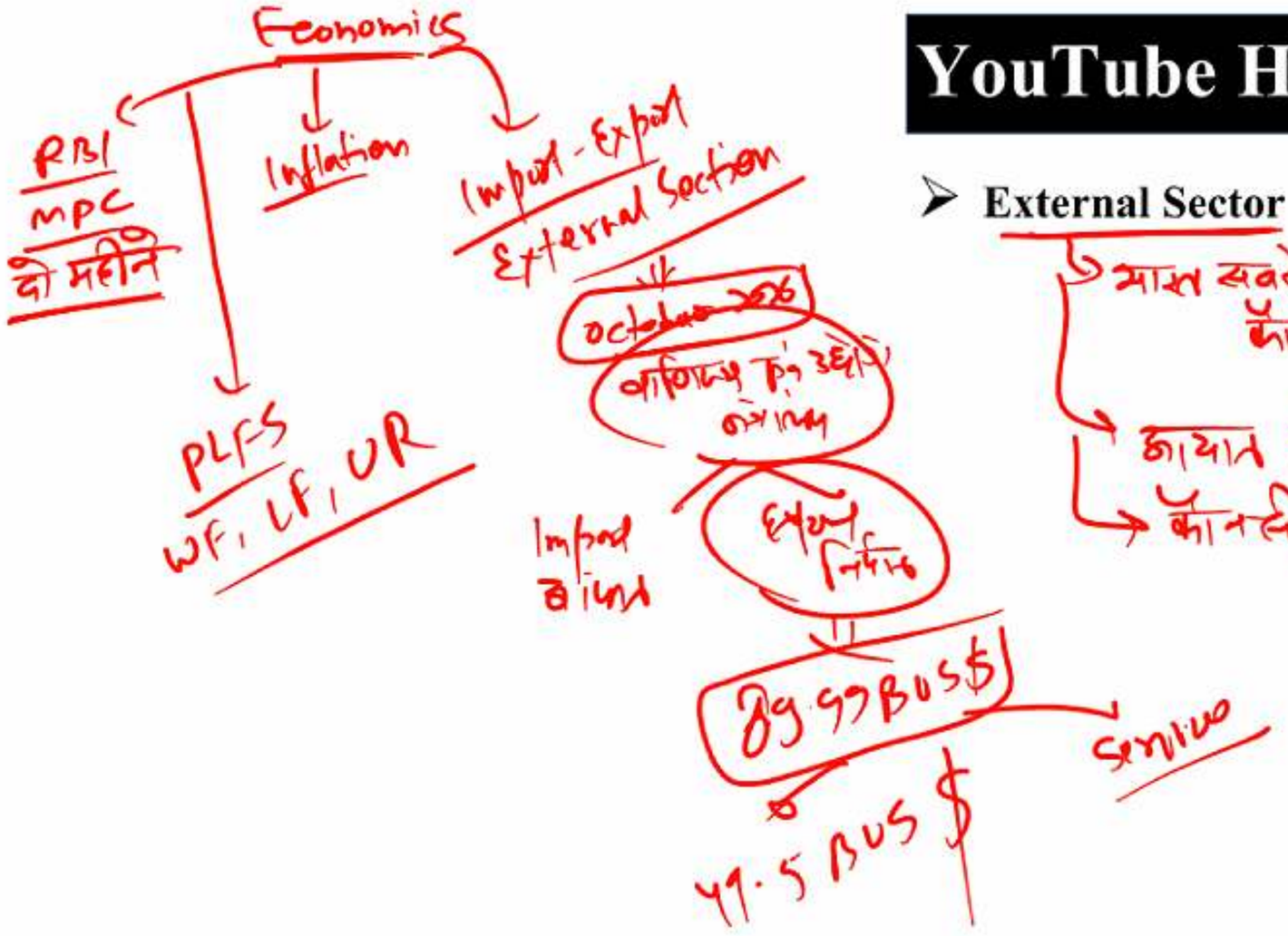
West Asia trade

India's exports to West Asia increased to $5.7 billion in October 2026, compared to $5.5 billion YoY. Imports from the region stood at $16.2 billion versus $15.99 billion during the period.

India's services trade remained robust in October 2026. Services exports grew to $40.5 billion as compared to $35.2 billion in October last year – a 15% growth.

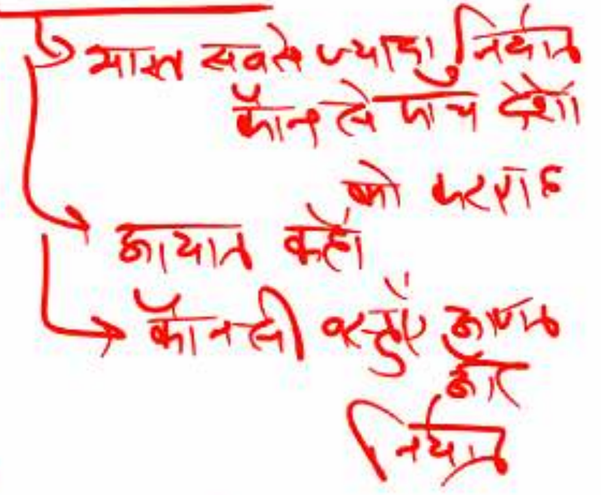
Services imports grew to $20.7 billion from $17.7 billion over the same period, a 17% increase.

The final services export figure for October, however, will be made available only next month once the Reserve Bank of India releases its figures.



YouTube Homework

- **External Sector**



महत्वपूर्ण तथ्य

अक्टूबर में विविधीकरण रंग लाया, निर्यात रिकॉर्ड ऊंचाई पर

- **रिकॉर्ड निर्यात:** अक्टूबर 2026 में भारत का वस्तु निर्यात बढ़कर **$49.5 अरब** के ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गया।
- **कुल व्यापार आंकड़ा:** वस्तुओं और सेवाओं को मिलाकर कुल निर्यात **$89.99 अरब** (लगभग 30% की वृद्धि) रहा, जिससे कुल व्यापार घाटा घटकर **$20.1 अरब** रह गया।
- **वस्तु आयात:** अक्टूबर 2026 में वस्तु आयात **$89.35 अरब** (16.5% की वृद्धि) दर्ज किया गया।
- **व्यापक वृद्धि:** यह वृद्धि किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि शीर्ष 50 में से 43 निर्यात गंतव्यों में सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।
- **प्रमुख क्षेत्र:** अफ्रीकी महाद्वीप को होने वाला निर्यात (अप्रैल-सितंबर 2026) 44% बढ़कर $31.4 अरब हो गया, और पश्चिम एशिया को निर्यात बढ़कर $5.7 अरब हो गया।
- **सेवा क्षेत्र:** सेवा निर्यात 15% बढ़कर **$40.5 अरब** और सेवा आयात 17% बढ़कर **$20.7 अरब** हो गया।

महत्वपूर्ण तथ्य

Four Naga civilians killed in Manipur highway ambush

The assailants ambushed two vehicles and opened fire; Kuki groups deny any involvement; the attack comes a day after a Kuki woman died and two Kuki men got injured in a similar incident

The Hindu Bureau
GUWAHATI

Unidentified gunmen killed four Naga civilians, including a mother and her son, on National Highway 202 in Manipur's Ukhrul district on Friday.

The assailants ambushed the vehicles – a hatchback and a pickup – in New Haven around 1 p.m. The location is in the Litan area, the epicentre of conflict between the Kuki and Naga communities since February this year.

The deceased were identified as Kapangkhui R.S., her son Haoleila R.S., Khanmila Keising, and August Ngalung. The first two victims were from Shangshak village and the latter two were from Tashar village; both villages are in Ukhrul district.

A Manipur Police statement said the miscreants opened fire on the two vehicles, and all four victims died on the spot.


Additional security personnel have been deployed to reinforce safety and prevent any more untoward incidents. FILE PHOTO

"Additional security forces, comprising Manipur Police, BSF (Border Security Force), Army, and Assam Rifles, have been rushed to the area to reinforce security and prevent any further untoward incidents. Search operations have been launched in and around the area of the incident to trace and apprehend those involved," the statement read.

Officials said the site of the attack is about 35 km from Ukhrul town and 6 km short of Litan. A blockade imposed by a Kuki organisation had stopped vehicular movement on the highway until A[illegible].

The government provides security escorts for vehicles travelling between Imphal and Ukhrul from Litan in both directions.

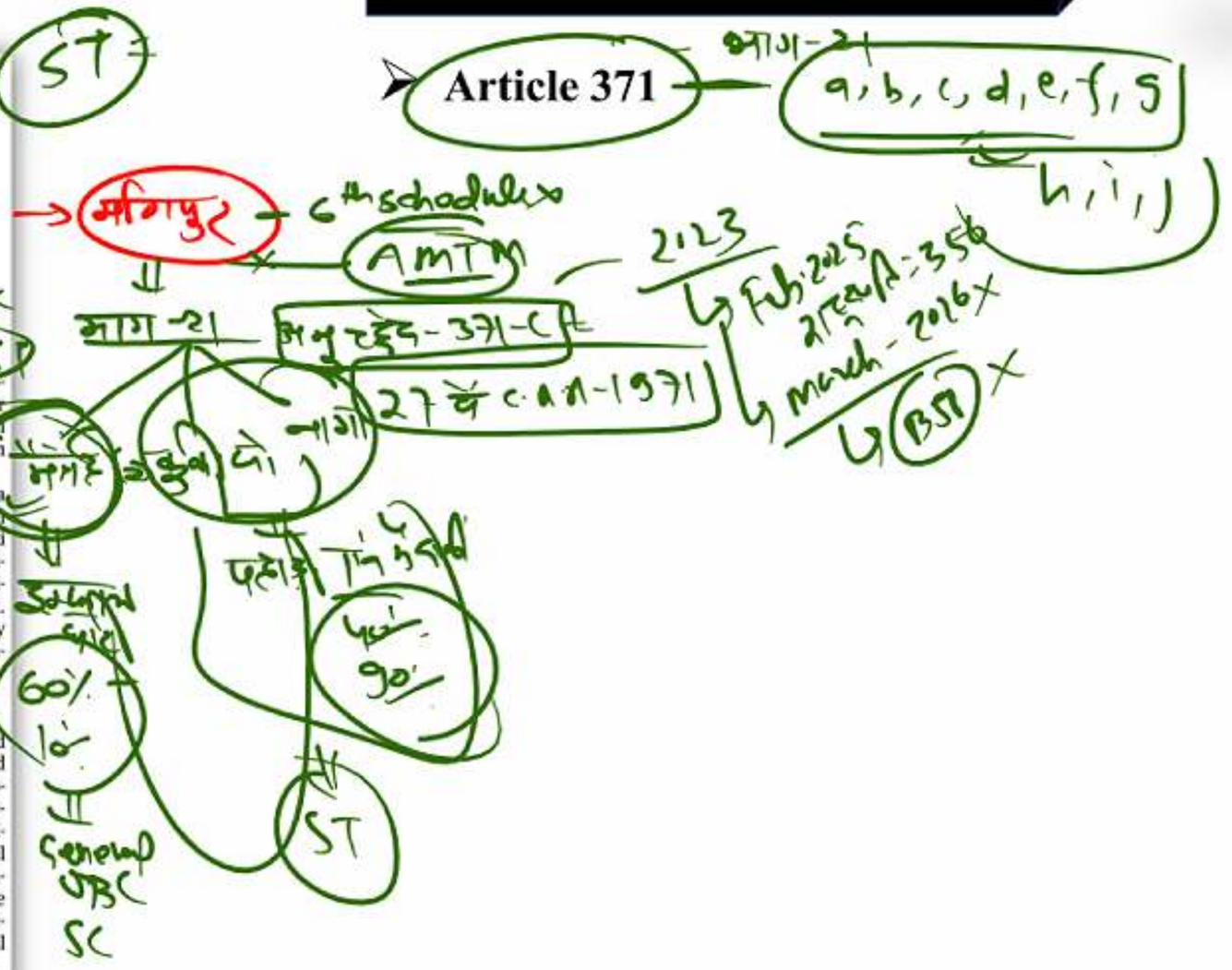
Friday's ambush came a day after a Kuki woman was killed and two Kuki men were injured in a similar firing incident in the adjoining Kangpokpi district. Ukhrul has a Naga majority while Kangpokpi has a Kuki majority.

'Impartial probe'

Naga organisations said Kuki armed groups could be behind the attack. However, Kuki groups categorically denied any involvement. Several Kuki civil society organisations condemned the killings of the Naga civilians and demanded an impartial probe into the incident.

More than 65 people have died since an alleged drunken brawl in February triggered the Kuki-Naga conflict in Manipur.

YouTube Homework



महत्वपूर्ण तथ्य

WHO flags funding gaps in prevention, treatment of TB

Bindu Shajan Perappadan
NEW DELHI

International donor funding fell by 14%, from $1.1 billion in 2024 to $0.94 billion in 2025, says report

Around 86% of the spending on measures against tuberculosis (TB) in 2025 came from domestic sources, the recently released Global Tuberculosis Report, 2026 by the World Health Organization (WHO) said, even as the reduction in international donor funding to combat the infectious disease remains a cause of concern.

The report notes that $22 billion is needed annually for TB prevention, diagnosis, treatment, and care to achieve the global targets agreed on at the 2023 United Nations high-level TB meeting by 2027.

In absolute terms, Brazil, China, India, the Russian Federation, and South Africa accounted for $3.7 billion (65%) of the total of $5.63 billion provided from domestic sources in low- and middle-income countries (LMICs).

Funding gap

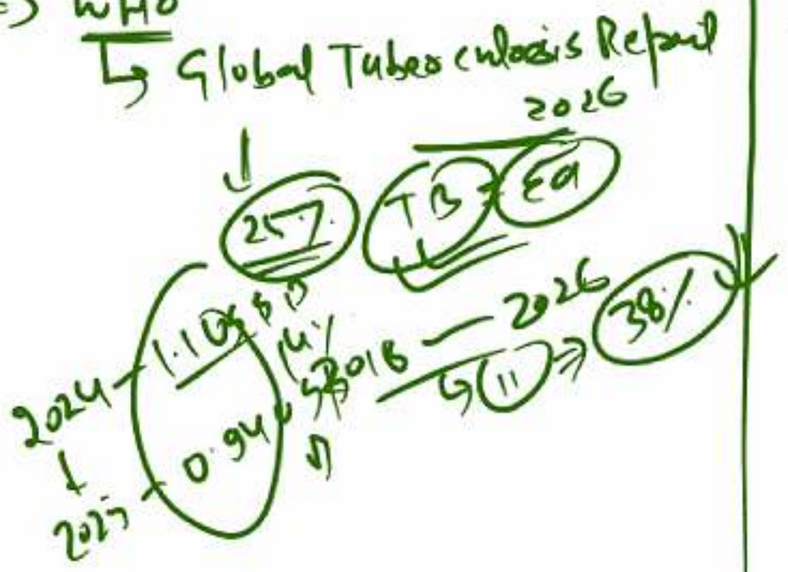
The report notes that international donor funding fell by 14%, from $1.1 billion in 2024 to $0.94 billion in 2025, having been relatively stable at $1.1-1.3 billion a year between 2015 and 2024.

Financing for TB research and innovation, at $1.2 billion in 2023, continued to fall far short of the global target of $5 billion a year. Progress to date has been constrained by the overall level of investment, the report said.

"...Over 80% of cases and deaths are in low- and middle-income countries. In 2025, the largest number of new TB cases occurred in the WHO South-East Asia Region (35%)," the report said.

The WHO on Friday called upon countries in the Southeast Asia Region to accelerate action to end TB. The latest TB estimates show the region accounts for 3.6 million people who developed TB in 2025 – 34% of the global total – and 4,00,000 TB-related deaths, or 35% of the global total. "These numbers are a stark reminder that TB remains one of the Region's most pressing public health and development challenges," said Nilesh Buddha, officer in-charge, WHO South-East Asia Region.

=> WHO
↳ Global Tuberculosis Report 2026



YouTube Homework

- WHO
- TB

महत्वपूर्ण तथ्य

ग्लोबल ट्यूबरकुलोसिस रिपोर्ट 2026" (Global Tuberculosis Report 2026)

- **रिपोर्ट का आधार:** यह रिपोर्ट दुनिया की 99% से अधिक आबादी और टीबी मामलों का प्रतिनिधित्व करने वाले 187 देशों और क्षेत्रों द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) को सौंपे गए आंकड़ों पर आधारित है।

वैश्विक टीबी का बोझ (2025 के आंकड़े):

- वर्ष 2025 में अनुमानित रूप से **1.06 करोड़ (10.6 million) लोग** टीबी से ग्रसित हुए।
- इस बीमारी के कारण दुनिया भर में **11.3 लाख (1.13 million) लोगों** की मृत्यु हुई।
- **प्रगति और चुनौतियां:** यद्यपि टीबी के नए मामलों (Incidence) और इससे होने वाली मौतों में गिरावट आई है, फिर भी यह प्रगति WHO की 'एंड टीबी स्ट्रैटेजी' (End TB Strategy) के निर्धारित लक्ष्यों और मील के पत्थरों से काफी पीछे है।
- **प्रमुख अंतराल (Gaps):** रिपोर्ट में निदान (Diagnosis), उपचार, रोकथाम और वित्तपोषण (Financing) में लगातार बने हुए बड़े अंतरालों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें निरंतर निवेश बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।
- **जारीकर्ता संस्था (Publishing Body):** यह रिपोर्ट प्रतिवर्ष **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** द्वारा जारी की जाती है।
- **उद्देश्य:** यह वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर तपेदिक (TB) की महामारी की स्थिति, इसके उन्मूलन की दिशा में हुई प्रगति, निदान (Diagnosis), उपचार और वित्तपोषण (Financing) का व्यापक आकलन प्रस्तुत करती है।

प्रमुख वैश्विक और राष्ट्रीय लक्ष्य:

- **WHO की 'End TB Strategy':** इसका लक्ष्य 2015 की तुलना में 2030 तक टीबी से होने वाली मौतों में 90% और नए मामलों (Incidence rate) में 80% की कमी लाना है।
- **सतत विकास लक्ष्य (SDG 3.3):** 2030 तक टीबी महामारी को समाप्त करना।
- **भारत का लक्ष्य:** भारत सरकार ने वैश्विक लक्ष्य (2030) से पाँच साल पहले, यानी **2025 तक टीबी मुक्त भारत** (TB Elimination) का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा था।

महत्वपूर्ण तथ्य

‘Deep-ocean submersible to undergo trial in early 2027’

Tiki Rajwi
THIRUVANANTHAPURAM

The 500-metre trial dive of India’s deep-ocean submersible Matsya-6000 can be expected early next year, Srinivasa Kumar Tummala, Secretary, Ministry of Earth Sciences, has said. The trial dive will be a significant step towards India’s push to send a crewed vehicle to a depth of 6,000 metres under the Samudrayaan Project.

“It is planned for a January-February time-frame in 2027. We are building Matsya-6000 in phases. So the first phase will be 500-metre depth trials,” Mr. Tummala told *The Hindu* on the sidelines of the two-day 92nd Annual Meeting of the Indian Academy of Sciences (IASc), which opened at the National Centre for Earth Science Studies (NCESS) in Thiruvananthapuram on Friday.



Srinivasa Tummala. TIKI RAJWI

According to him, the Bay of Bengal will be the location for the dive. Two “pilots”, or “aquanauts”, from the National Institute of Ocean Technology (NIOT), the autonomous institute under the Ministry responsible for the project, are undergoing training.

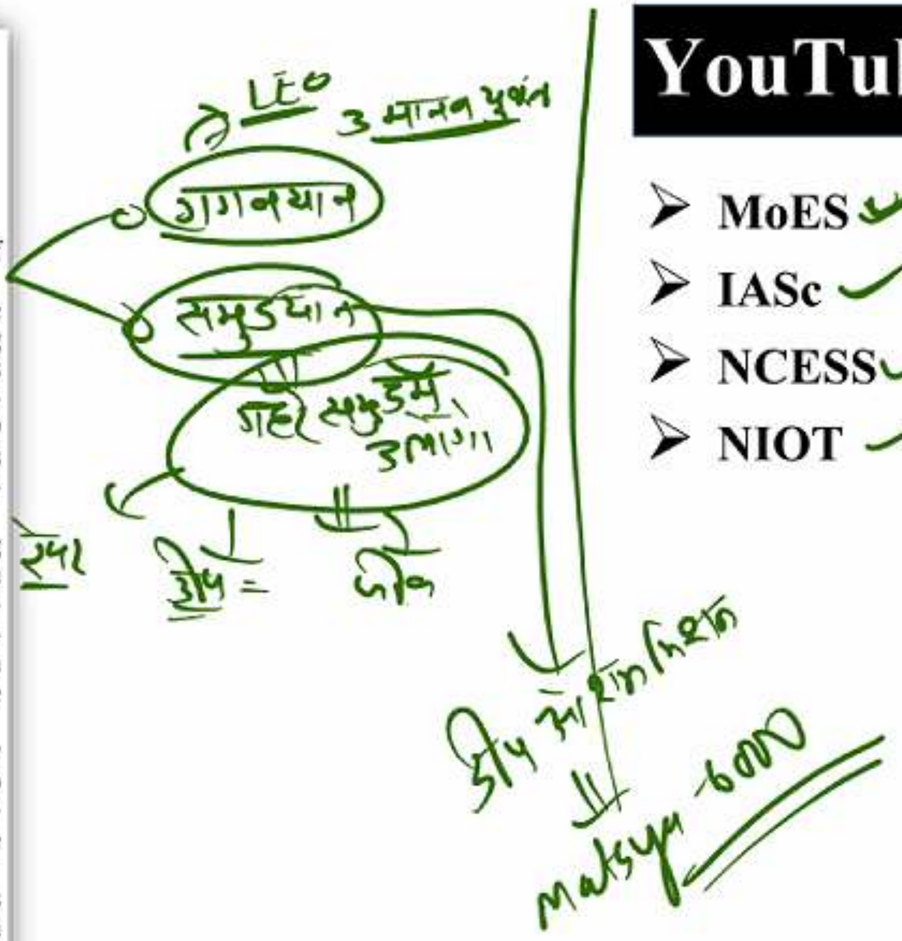
Under India’s Deep Ocean Mission, the Ministry had entrusted NIOT with the task of designing and developing the “deep-ocean human scientific submersible” – christened Matsya-6000 – as part of the Samudrayaan Project.

The submersible will be capable of transporting three humans within its compact 2.1-metre diameter spherical hull to 6,000 metres, giving India’s ocean exploration capabilities a significant boost.

The NIOT is working closely with the Indian Space Research Organisation (ISRO) for the construction of the titanium hull of Matsya-6000, the Secretary said.

“There are very few countries that are able to build a 2.1-metre (diameter) titanium sphere,” he said.

Despite the challenges involved, Samudrayaan and Matsya-6000 have not garnered the kind of public appeal that the ISRO’s own Gaganyaan programme has been enjoying. Yet, both initiatives share elements, the Secretary said.



YouTube Homework

- MoES
- IASc
- NCESS
- NIOT

महत्वपूर्ण तथ्य

- **समुद्रयान मिशन (Samudrayan Project)** भारत का पहला मानवयुक्त गहरे समुद्र का मिशन है, जिसका मुख्य उद्देश्य गहरे समुद्र के संसाधनों और जैव विविधता का अध्ययन करने के लिए मनुष्यों को समुद्र की गहराई में भेजना है। **मत्स्य-6000 (Matsya-6000)** वह स्वदेशी पनडुब्बी (Submersible) है जिसे इस मिशन के लिए विकसित किया गया है।

समुद्रयान प्रोजेक्ट (Samudrayan Project)

- **मंत्रालय और नोडल एजेंसी:** यह मिशन **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES)** के महत्वाकांक्षी **'डीप ओशन मिशन' (Deep Ocean Mission)** का एक हिस्सा है। इसे **राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT), चेन्नई** द्वारा विकसित और क्रियान्वित किया जा रहा है।
- **मुख्य उद्देश्य:**
  - गहरे समुद्र में खनिज संसाधनों (जैसे पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स, कोबाल्ट, निकल, मैंगनीज आदि) की खोज और आकलन करना।
  - गहरे समुद्र की जैव विविधता (Deep-sea biodiversity) और पारिस्थितिकी तंत्र का प्रत्यक्ष अवलोकन और वैज्ञानिक अनुसंधान करना।
  - समुद्री पर्यटन और जल के नीचे इंजीनियरिंग सहायता (Underwater engineering support) की संभावनाओं को तलाशना।
- **रणनीतिक महत्व:** इस मिशन की सफलता के साथ ही भारत उन चुनिंदा देशों (अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस और चीन) के विशिष्ट क्लब में शामिल हो जाएगा, जिनके पास गहरे समुद्र में मानवयुक्त मिशन भेजने की स्वदेशी तकनीक है। यह मिशन भारत की **'ब्लू इकोनॉमी' (Blue Economy)** को बढ़ावा देने में मील का पत्थर साबित होगा।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **डीप ओशन मिशन (Deep Ocean Mission)** भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) द्वारा शुरू किया गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण और महत्वाकांक्षी मिशन है। इसका मुख्य उद्देश्य गहरे समुद्र के संसाधनों का सतत उपयोग करने और गहरे समुद्र की जैव विविधता व प्रौद्योगिकियों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक तकनीकों को विकसित करना है।
- इस मिशन के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:
- **शुरुआत और मंजूरी:** इस मिशन को भारत सरकार द्वारा जून 2021 में आधिकारिक मंजूरी दी गई थी, जिसे देश की 'ब्लू इकोनॉमी' (नीली अर्थव्यवस्था) को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।
- **समुद्रयान प्रोजेक्ट (Samudrayan):** यह इस मिशन का सबसे प्रमुख हिस्सा है। इसके तहत **'मत्स्य-6000' (Matsya-6000)** नामक स्वदेशी मानवयुक्त पनडुब्बी (Submersible) विकसित की जा रही है, जो 3 वैज्ञानिकों को समुद्र तल से 6,000 मीटर की गहराई तक ले जाने में सक्षम होगी।
- **प्रमुख उद्देश्य और घटक:**
  - **खनिज अन्वेषण (Mineral Exploration):** हिंद महासागर के गहरे तल पर मौजूद महत्वपूर्ण खनिजों जैसे पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स (Polymetallic Nodules),निकल, कोबाल्ट, मैंगनीज और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों की खोज करना।
  - **समुद्री जलवायु परिवर्तन सलाहकार सेवाएं:** महासागरों में होने वाले बदलावों को समझने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए ओशन क्लाइमेट चेंज एडवाइजरी सर्विसेज स्थापित करना।
  - **गहरे समुद्र की जैव विविधता:** गहरे समुद्र के पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता का संरक्षण तथा सर्वेक्षण करना।
  - **महासागर सर्वेक्षण और अन्वेषण:** समुद्र के भीतर विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों और इंजीनियरिंग नवाचारों को बढ़ावा देना।
  - **अपतटीय महासागर थर्मल ऊर्जा रूपांतरण (OTEC):** महासागर तापीय ऊर्जा रूपांतरण (OTEC) विविधीकरण और डिसेलिनेशन (खारे पानी को मीठा बनाने) संयंत्रों का विकास करना।

मत्स्य-6000 (Matsya-6000)

- मत्स्य-6000 एक स्वदेशी रूप से डिजाइन और विकसित की गई मानवयुक्त सबमर्सिबल (पनडुब्बी) है:
- **क्षमता और गहराई:** इसे **3 मनुष्यों (एक्वानॉट्स)** को समुद्र तल से **6,000 मीटर (6 किलोमीटर)** की गहराई तक ले जाने के लिए डिजाइन किया गया है।
- **निर्माण और संरचना:** गहरे समुद्र के अत्यधिक दबाव (जो सतह के दबाव से लगभग 600 गुना अधिक होता है) को झेलने के लिए इसके 'पर्सनल स्फीयर' (जिस हिस्से में वैज्ञानिक बैठते हैं) का निर्माण **टाइटेनियम मिश्र धातु (Titanium Alloy)** से किया गया है। इसका व्यास लगभग 2.1 मीटर है।
- **कार्य करने की अवधि (Endurance):** यह सामान्य परिचालन स्थितियों में समुद्र के भीतर **12 घंटे** तक काम कर सकती है, जबकि किसी आपातकालीन स्थिति में इसमें **96 घंटे (4 दिन)** तक जीवन रक्षक प्रणाली (Life Support System) उपलब्ध कराने की क्षमता है।
- **तकनीकी उपकरण:** इसमें गहरे समुद्र के अंधेरे में देखने के लिए उच्च-तीव्रता वाली एलईडी लाइटें, हाई-डेफिनिशन कैमरे, समुद्र तल से नमूने एकत्र करने के लिए रोबोटिक आर्म्स (Manipulators) और पानी के भीतर संवाद करने के लिए ध्वनिक संचार प्रणाली (Acoustic communication system) लगी हुई है।

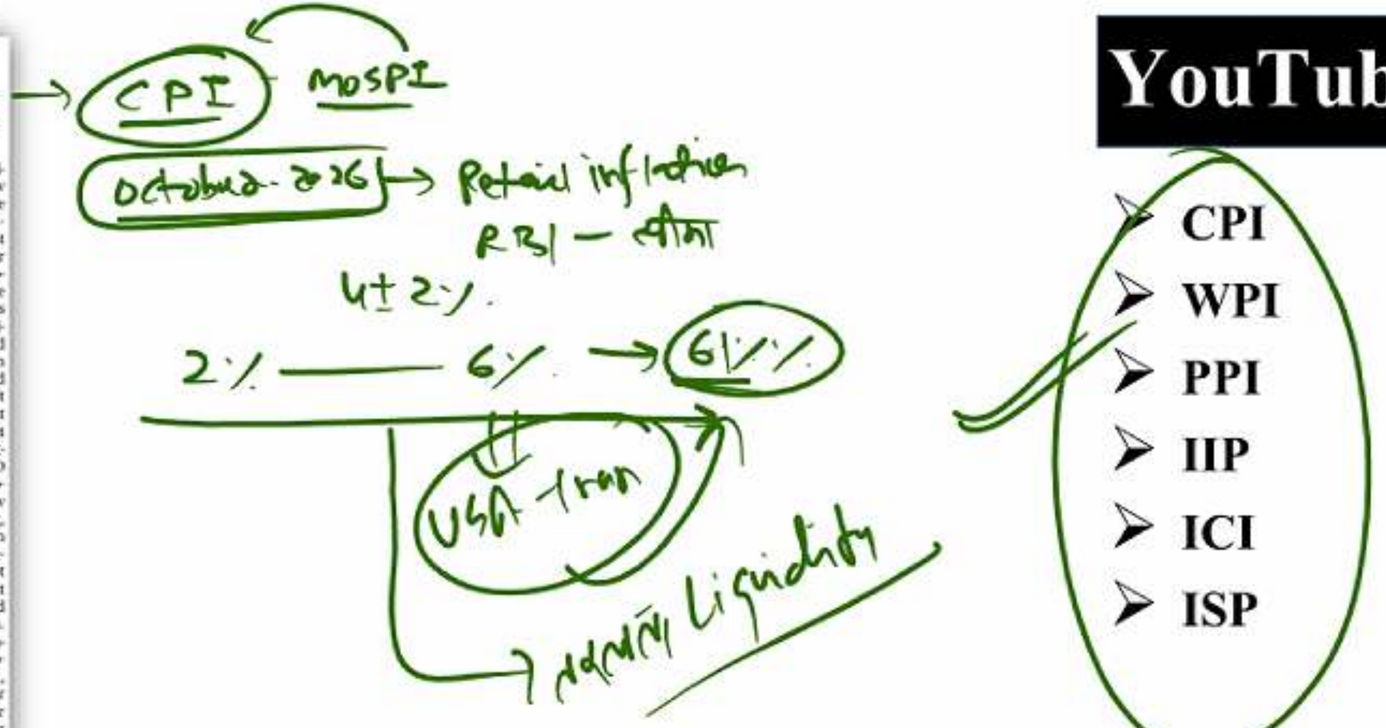
महत्वपूर्ण तथ्य

Brace for impact

High inflation due to external factors could soon exacerbate economic pain

India's much-hyped domestic economic resilience is set to be tested over the next few months as external factors start to impose inescapable pressures. A case in point is inflation. The latest data on retail inflation show that it crossed the Reserve Bank of India's 6% upper comfort limit in October 2026. According to economists, this is likely to continue through the third quarter of this financial year, which means at least two more months of high inflation. Agricultural shortfalls brought on by a patchy and deficient monsoon have meant that food inflation rose sharply to 8.5% in October 2026. Elevated fuel prices meant that inflation in the transport category also rose sharply. What is worse is that high inflation is spreading to almost every aspect of a household's day-to-day needs. In fact, the latest Consumer Price Index (CPI) data show that 10 of the 12 major categories saw inflation in October hitting their highest levels recorded in the new series of the index. So, things such as clothing, footwear, housing, furnishings, and services such as healthcare, education, communication, recreation, and restaurant and hospitality are not only getting more expensive, they are doing so at an accelerating rate. This would have been bad enough had wages been increasing in real terms. Yet, latest research by Data for India on the country's official wage statistics shows that, while nominal wages about doubled from 2012 to 2024, they actually fell 4% over the same period after adjusting for inflation. And this is sharper for high-skilled and high-earning workers. Lower wage earners saw marginal increases over this period. While this is of some comfort, it is the higher wage earners that drive consumption in an economy. Real wage contraction for them, which is likely to have worsened in 2026, will hit consumption levels and private investment.

Further, there is strong evidence to suggest that the official inflation metrics are not capturing the full extent of rising prices. Data on cash with the public and UPI transactions show the value of both have been growing in double digits over the last year and more, significantly outpacing nominal GDP growth. This either suggests that the informal economy is far larger than earlier thought or, more likely, that inflation is well above what the official figures are being able to capture. Unfortunately, there are no real magic-wand fixes to this situation. Inflation is largely beyond the government's control, and wage growth cannot happen overnight. The only way forward is to continue trying to spur sector-specific growth and warn people of the impending storm.



YouTube Homework

- CPI
- WPI
- PPI
- IIP
- ICI
- ISP

महत्वपूर्ण तथ्य

बाहरी कारकों के कारण उच्च मुद्रास्फीति जल्द ही आर्थिक संकट को बढ़ा सकती है

- अगले कुछ महीनों में भारत की बहुचर्चित घरेलू आर्थिक सुदृढ़ता की परीक्षा होने वाली है, क्योंकि बाहरी कारकों ने अपरिहार्य दबाव डालना शुरू कर दिया है। इसका एक प्रमुख उदाहरण मुद्रास्फीति (महंगाई) है। खुदरा मुद्रास्फीति के ताजा आंकड़े बताते हैं कि अक्टूबर 2026 में इसने भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की 6% की ऊपरी सहनीय सीमा को पार कर लिया है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार, इस वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही तक इसके जारी रहने की संभावना है, जिसका अर्थ है कि कम से कम दो महीने और उच्च मुद्रास्फीति बनी रहेगी। अनियमित और कमजोर मानसून के कारण कृषि उत्पादन में आई कमी का मतलब है कि अक्टूबर 2026 में खाद्य मुद्रास्फीति तेजी से बढ़कर 8.5% हो गई। ईंधन की बढ़ी हुई कीमतों के कारण परिवहन श्रेणी में भी मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ी है।
- इससे भी बुरी बात यह है कि उच्च मुद्रास्फीति एक परिवार की रोजमर्रा की लगभग हर जरूरत तक फैल रही है। वास्तव में, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) के ताजा आंकड़े दर्शाते हैं कि अक्टूबर में 12 प्रमुख श्रेणियों में से 10 में मुद्रास्फीति सूचकांक की नई श्रृंखला में दर्ज अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई। इसलिए, कपड़े, जूते, आवास, साज-सज्जा जैसी वस्तुएं और स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, संचार, मनोरंजन तथा रेस्तरां और आतिथ्य (हॉस्पिटैलिटी) जैसी सेवाएं न केवल महंगी हो रही हैं, बल्कि उनकी कीमतें बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। यदि वास्तविक संदर्भ में मजदूरी (वेतन) बढ़ रही होती, तब भी यह स्थिति काफी खराब होती। फिर भी, देश के आधिकारिक मजदूरी आंकड़ों पर 'डेटा फॉर इंडिया' (Data for India) के नवीनतम शोध से पता चलता है कि 2012 से 2024 तक नाममात्र मजदूरी (Nominal wages) लगभग दोगुनी होने के बावजूद, मुद्रास्फीति के लिए समायोजित करने के बाद इसी अवधि में इसमें वास्तव में 4% की गिरावट आई है। और उच्च-कुशल तथा अधिक आय वाले श्रमिकों के लिए यह गिरावट और भी तीव्र है। इस अवधि के दौरान कम वेतन पाने वालों की आय में मामूली वृद्धि देखी गई। हालांकि यह कुछ राहत की बात है, लेकिन अर्थव्यवस्था में खपत को बढ़ावा देने वाले मुख्य रूप से अधिक वेतन पाने वाले लोग ही होते हैं। उनके वास्तविक वेतन में संकुचन—जिसके 2026 में और खराब होने की संभावना है—खपत के स्तर और निजी निवेश को प्रभावित करेगा।
- इसके अलावा, इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि आधिकारिक मुद्रास्फीति के पैमाने बढ़ती कीमतों की पूरी सीमा को दर्ज नहीं कर पा रहे हैं। जनता के पास मौजूद नकदी और यूपीआई (UPI) लेनदेन के आंकड़े बताते हैं कि पिछले एक साल और उससे अधिक समय से इन दोनों का मूल्य दोहरे अंकों (Double digits) में बढ़ रहा है, जो नाममात्र जीडीपी (Nominal GDP) की वृद्धि दर से कहीं अधिक है। यह या तो इस ओर इशारा करता है कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था पहले के अनुमान से कहीं अधिक बड़ी है, या फिर अधिक संभावना यह है कि मुद्रास्फीति आधिकारिक आंकड़ों की पकड़ से कहीं ऊपर है। दुर्भाग्य से, इस स्थिति से निपटने के लिए कोई चादुई समाधान नहीं है। मुद्रास्फीति काफी हद तक सरकार के नियंत्रण से बाहर है, और वेतन वृद्धि रातोंरात नहीं हो सकती। आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता यही है कि क्षेत्र-विशिष्ट विकास (Sector-specific growth) को बढ़ावा देने का प्रयास जारी रखा जाए और लोगों को इस आने वाले संकट के प्रति सचेत किया जाए।

महत्वपूर्ण तथ्य

Critical ban

India needs to create an entire ecosystem for recycling of lithium-ion batteries

On November 10, the Directorate General of Foreign Trade banned the export of lithium-ion battery black mass by moving it from the "free" to the "prohibited" list of exports. Black mass is an intermediate product when spent batteries and factory scrap are shredded. It contains valuable lithium, nickel, cobalt, manganese and graphite. The Commerce Ministry says the ban will ensure feedstock for domestic refiners, lift their capacity utilisation and draw investment. While the recycling of lead-acid batteries end-to-end is an established ecosystem and formalised, too, lithium-ion battery recycling is an emerging segment with only a few dozen licensed operators but has much potential given the scale of use of such batteries in EVs. While the ban will redirect supply it will not automatically create a market and ecosystem. Just banning export without creating an entire ecosystem will only lead to dumping of lithium-ion batteries into landfills if the blackmass has no market. Blackmass production is a largely mechanical process but further downstream processing is more specialised chemical processing requiring larger investment and further policy support. If downstream units are online, their output can directly feed into indigenous lithium-ion battery manufacture.

India depends heavily on imports for critical minerals such as those used in battery inputs. Beyond working on supply aspects, the government must address the price gap to create a robust recycling market. Under the Battery Waste Management Rules, 2022, producers buy extended producer responsibility (EPR) certificates from recyclers but these are undervalued. Cheap certificates reward recycling on paper over investment in high-yield plants. A floor price that covers the full cost of recovery, with digital tracking, would fix that. Rare earths show how recycling remains a missed opportunity for India because of policy gaps. A smartphone can be up to 1% neodymium-iron-boron magnet by weight. That puts its rare earth content at about 3,000 parts per million, comparable to India's monazite beach sands. Extracting it takes less energy than mining. A magnet separated from the phone is about 30% rare earth. Magnets make up as much as 3% of a hard drive, but are usable only if they are removed before the drive is shredded for data destruction. Yet the e-waste rules do not require rare earth separation. Rare earths need a separate EPR category, too. Payment by weight cannot be applied for rare earth minerals.

lithium-ion Battery
Black Mass

YouTube Homework

- Critical Minerals

महत्वपूर्ण तथ्य

भारत को लीथियम-आयन बैटरी के रीसाइक्लिंग के लिए एक पूरा इकोसिस्टम बनाने की जरूरत है

- 10 नवंबर को, विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT) ने लीथियम-आयन बैटरी ब्लैक मास के निर्यात को "मुक्त" (free) श्रेणी से हटाकर "प्रतिबंधित" (prohibited) निर्यात सूची में डाल दिया।
- ब्लैक मास एक मध्यवर्ती (intermedium) उत्पाद है जो पुरानी बैटरियों और फैक्ट्री के कचरे को कतरने (shredding) पर बनता है।
- इसमें मूल्यवान लीथियम, निकल, कोबाल्ट, मैंगनीज और ग्रेफाइट होता है।
- वाणिज्य मंत्रालय का कहना है कि इस प्रतिबंध से घरेलू रिफाइनरों के लिए कच्चा माल (feedstock) सुनिश्चित होगा, उनकी क्षमता उपयोग में वृद्धि होगी और निवेश आकर्षित होगा। जबकि लेड-एसिड (सीसा-अम्ल) बैटरी का रीसाइक्लिंग शुरू से अंत तक एक स्थापित और औपचारिक इकोसिस्टम है, लीथियम-आयन बैटरी रीसाइक्लिंग अभी एक उभरता हुआ सेगमेंट है जिसमें केवल कुछ दर्जन लाइसेंस प्राप्त ऑपरेटर हैं, लेकिन ईवी (EVs) में ऐसी बैटरियों के उपयोग के पैमाने को देखते हुए इसमें बहुत अधिक संभावनाएं हैं।
- यद्यपि इस प्रतिबंध से आपूर्ति की दिशा बदल जाएगी, लेकिन यह स्वचालित रूप से कोई बाजार और इकोसिस्टम नहीं बनाएगा। बिना पूरा इकोसिस्टम बनाए केवल निर्यात पर प्रतिबंध लगाने से, यदि ब्लैक मास का कोई बाजार नहीं हुआ, तो लीथियम-आयन बैटरियों को लैंडफिल (कचरे के ढेर) में डंप करने की स्थिति पैदा हो जाएगी। ब्लैक मास का उत्पादन मुख्य रूप से एक यांत्रिक प्रक्रिया है, लेकिन आगे की डाउनस्ट्रीम प्रोसेसिंग अधिक विशिष्ट रासायनिक प्रक्रिया है जिसमें बड़े निवेश और अतिरिक्त नीतिगत समर्थन की आवश्यकता होती है। यदि डाउनस्ट्रीम इकाइयां शुरू हो जाती हैं, तो उनका उत्पादन सीधे स्वदेशी लीथियम-आयन बैटरी निर्माण में इस्तेमाल किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- बैटरी इनपुट में उपयोग होने वाले महत्वपूर्ण खनिजों के लिए भारत भारी रूप से आयात पर निर्भर है। आपूर्ति के पहलुओं पर काम करने के अलावा, सरकार को एक मजबूत रीसाइक्लिंग बाजार बनाने के लिए मूल्य अंतराल (price gap) को भी दूर करना होगा।
- बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022 के तहत, निर्माता रीसाइक्लर से विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) प्रमाण पत्र खरीदते हैं लेकिन ये कम मूल्य वाले होते हैं। सस्ते प्रमाण पत्र उच्च उपज वाले क्षेत्रों में निवेश की तुलना में कागजी रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देते हैं। डिजिटल ट्रैकिंग के साथ एक न्यूनतम मूल्य (floor price), जो वसूली की पूरी लागत को कवर करता हो, इस समस्या को ठीक कर सकता है।
- दुर्लभ पृथ्वी तत्व (Rare earths) यह दर्शाते हैं कि नीतिगत कमियों के कारण रीसाइक्लिंग भारत के लिए एक चूका हुआ अवसर कैसे बना हुआ है। वजन के हिसाब से एक स्मार्टफोन में 1% तक नियोडिमियम-आइसन-बोरॉन चुंबक (neodymium-iron-boron magnet) हो सकता है। इससे इसकी दुर्लभ पृथ्वी सामग्री लगभग 3,000 पार्ट्स प्रति मिलियन (ppm) हो जाती है, जो भारत की मोनाजाइट समुद्र तट की रेत के तुलनीय है। इसे निकालने में खनन की तुलना में कम ऊर्जा लगती है। फोन से अलग किया गया एक चुंबक लगभग 30% दुर्लभ पृथ्वी होता है। हार्ड ड्राइव में चुंबक 3% तक हो सकते हैं, लेकिन वे तभी उपयोगी होते हैं जब डेटा नष्ट करने के लिए ड्राइव को कतरने (shredding) से पहले उन्हें हटा दिया जाए। फिर भी ई-कचरा नियम दुर्लभ पृथ्वी को अलग करने की मांग नहीं करते हैं। दुर्लभ पृथ्वी के लिए एक अलग ईपीआर (EPR) श्रेणी की भी आवश्यकता है। दुर्लभ पृथ्वी खनिजों पर वजन के आधार पर भुगतान लागू नहीं किया जा सकता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Hope Pakistan will attend SCO meet in Delhi: Minister

Culture Minister says the two countries share a common civilisational legacy; however, External Affairs Ministry indicates it may not grant Punjab CM nod to travel to Lahore for another meet

Suhasini Haidar
Sreeparna Chakrabarty
NEW DELHI

India and Pakistan have a shared "civilisational and cultural" past, Union Culture Minister Gajendra Singh Shekhawat said on Friday, adding that India hopes the neighbouring country will attend the upcoming SCO Civilisational Dialogue Forum in New Delhi. China, Kazakhstan, Iran, Tajikistan, and Uzbekistan are among countries that have already confirmed their participation.

However, the government said it would follow "national policy" on Pakistan in view of the 2025 Pahalgam terror attacks, indicating that it may not grant Punjab Chief Minister Bhagwant Singh Mann clearance to attend an international Punjabi cultural conference in Lahore in November-end.

Mr. Shekhawat was briefing presspersons about preparations for the first Civilisational Dialogue Forum of the 10-nation Shanghai Cooperation Organisation (SCO) grouping from November 20 to 22. As reported by *The Hindu* on October 28, the government has sent an invitation to Pakistan's Minister for National Heritage and Culture, Aurangzeb Khan Khichi, a first such ministerial-level invitation since 2023. Pakistan has not so far responded to the invitation, and while they have not confirmed the Minister's presence, sources said they expect some Pakistani official participation.



The SCO meet on November 21 and 22 will discuss civilisational and cultural expression, art and architecture, and language, literature and manuscripts, says Gajendra Singh Shekhawat. PTI

'Evolved together'

"I believe that Pakistan's civilisational and cultural progress is no different from ours [India's]," Mr. Shekhawat said in response to a question about the invitation, given the tensions between the two neighbours. "They [Pakistan] separated from us less than 100 years ago, but prior to that we [India and Pakistan] have evolved together. So, we should not have any differences over these issues."

The Minister said the purpose of the upcoming forum, first proposed by Prime Minister Narendra Modi, was to see how the SCO could "go a step beyond geopolitical, strategic and bilateral relations and strengthen our cultural ties so that in the future we can have better relations and communications between the people of our countries".

Asked about Pakistan's participation on Friday, External Affairs Ministry official spokesperson Randhir Jaiswal said: "We look forward to hosting this civilisational dialogue." However, on the question of Mr. Mann, who has been invited along with Punjab MLAs by Pakistan's Minority Affairs Minister Ramesh Singh Arora to Lahore, Mr. Jaiswal took a tougher line.

Effect of attacks

"When it comes to relations with foreign countries, we have a national policy and expect everybody to abide by it," Mr. Jaiswal said, adding that the Ministry would make an assessment on the invitation from Pakistan in line with India's overall policy. "As far as our position on Pakistan after the Pahalgam terror attack is concerned, it should be amply clear to all as to where we stand," he said.

Outlining the programme for the SCO dialogue forum, Mr. Shekhawat said the discussions on November 21 and 22 will revolve around the broad themes of civilisational and cultural expression, art and architecture, and language, literature and manuscripts.

SCO Civilizational Dialogue Forum
New Delhi
20-22 Nov. 2026
SCO
Pakistan

महत्वपूर्ण तथ्य

Hope Pakistan will attend SCO meet in Delhi: Minister

Culture Minister says the two countries share a common civilisational legacy; however, External Affairs Ministry indicates it may not grant Punjab CM nod to travel to Lahore for another meet

Suhasini Haidar
Sreeparna Chakrabarty
NEW DELHI

India and Pakistan have a shared "civilisational and cultural" past, Union Culture Minister Gajendra Singh Shekhawat said on Friday, adding that India hopes the neighbouring country will attend the upcoming SCO Civilisational Dialogue Forum in New Delhi. China, Kazakhstan, Iran, Tajikistan, and Uzbekistan are among countries that have already confirmed their participation.

However, the government said it would follow "national policy" on Pakistan in view of the 2025 Pahalgam terror attacks, indicating that it may not grant Punjab Chief Minister Bhagwant Singh Mann clearance to attend an international Punjabi cultural conference in Lahore in November-end.

Mr. Shekhawat was briefing presspersons about preparations for the first Civilisational Dialogue Forum of the 10-nation Shanghai Cooperation Organisation (SCO) grouping from November 20 to 22. As reported by *The Hindu* on October 28, the government has sent an invitation to Pakistan's Minister for National Heritage and Culture, Aurangzeb Khan Khichi, a first such ministerial-level invitation since 2023. Pakistan has not so far responded to the invitation, and while they have not confirmed the Minister's presence, sources said they expect some Pakistani official participation.



The SCO meet on November 21 and 22 will discuss civilisational and cultural expression, art and architecture, and language, literature and manuscripts, says Gajendra Singh Shekhawat. PTI

'Evolved together'

"I believe that Pakistan's civilisational and cultural progress is no different from ours [India's]," Mr. Shekhawat said in response to a question about the invitation, given the tensions between the two neighbours. "They [Pakistan] separated from us less than 100 years ago, but prior to that we [India and Pakistan] have evolved together. So, we should not have any differences over these issues."

The Minister said the purpose of the upcoming forum, first proposed by Prime Minister Narendra Modi, was to see how the SCO could "go a step beyond geopolitical, strategic and bilateral relations and strengthen our cultural ties so that in the future we can have better relations and communications between the people of our countries".

Asked about Pakistan's participation on Friday, External Affairs Ministry official spokesperson Randhir Jaiswal said: "We look forward to hosting this civilisational dialogue." However, on the question of Mr. Mann, who has been invited along with Punjab MLAs by Pakistan's Minority Affairs Minister Ramesh Singh Arora to Lahore, Mr. Jaiswal took a tougher line.

Effect of attacks

"When it comes to relations with foreign countries, we have a national policy and expect everybody to abide by it," Mr. Jaiswal said, adding that the Ministry would make an assessment on the invitation from Pakistan in line with India's overall policy. "As far as our position on Pakistan after the Pahalgam terror attack is concerned, it should be amply clear to all as to where we stand," he said.

Outlining the programme for the SCO dialogue forum, Mr. Shekhawat said the discussions on November 21 and 22 will revolve around the broad themes of civilisational and cultural expression, art and architecture, and language, literature and manuscripts.

महत्वपूर्ण तथ्य

- पहला SCO सभ्यतागत संवाद मंच (Civilisational Dialogue Forum) 20 से 22 नवंबर 2026 तक नई दिल्ली के ऐतिहासिक पुराना किला परिसर में आयोजित किया जाएगा। इसकी मेजबानी भारत (संस्कृति मंत्रालय और विदेश मंत्रालय) द्वारा की जा रही है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 20 नवंबर को इसका उद्घाटन करेंगे।

आयोजन की मुख्य बातें

- तारीख और स्थान: यह तीन दिवसीय कार्यक्रम 20 नवंबर से 22 नवंबर 2026 तक नई दिल्ली के पुराना किला (Purana Qila) में होगा।
- मेजबानी और उद्घाटन: इस कार्यक्रम का आयोजन भारत के संस्कृति मंत्रालय और विदेश मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के अनुसार, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसका उद्घाटन करेंगे। (नोट: 2026-27 के लिए SCO की वार्षिक रोटेटिंग अध्यक्षता पाकिस्तान के पास है, लेकिन इस पहले संवाद मंच की मेजबानी भारत कर रहा है)।
- उद्देश्य: इसका प्रस्ताव पीएम मोदी ने 2025 में तियानजिन शिखर सम्मेलन में दिया था। इसका मुख्य लक्ष्य साझा सांस्कृतिक विरासत, कला, वास्तुकला, साहित्य और प्राचीन ज्ञान परंपराओं के जरिए देशों के बीच आपसी समझ को बढ़ाना है।

कौन-कौन से देश शामिल होंगे?

- भारत ने इस मंच के लिए SCO के सभी स्थायी सदस्यों, पर्यवेक्षक देशों और संवाद साझेदारों सहित कुल 25 देशों को निमंत्रण भेजा है।
- SCO के 10 स्थायी सदस्य (जिन्हें आमंत्रित किया गया है): भारत, चीन, रूस, पाकिस्तान, ईरान, बेलारूस, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान।
- पुष्टि कर चुके प्रमुख देश: केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने जानकारी दी है कि अब तक 15 देशों ने अपनी भागीदारी की पुष्टि कर दी है। इनमें चीन, कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान, ईरान, बेलारूस, ताजिकिस्तान (सदस्य देश) के साथ-साथ संवाद साझेदार देश जैसे नेपाल, आर्मेनिया, सऊदी अरब और कंबोडिया शामिल हैं।
- पाकिस्तान की स्थिति: भारत ने परंपरा के अनुसार पाकिस्तान के संस्कृति मंत्री औरंगजेब खान खिची को भी औपचारिक न्योता भेजा है, हालांकि इस्लामाबाद की ओर से अभी इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

महत्वपूर्ण तथ्य

Global disruption of Microsoft services hits Indian firms

Balasubramanyam C.P.
CHENNAI

The global disruption of multiple Microsoft services, which began on Thursday and continued late into Friday, affected several Indian businesses' internal communications and customer-facing operations.

In its latest update on Friday, the company said it was making progress in fixing the outage, which has affected email access and workplace applications in businesses, public services, and other organisations across the globe. In India, the disruptions affected businesses from startups to multinational corporations.

A senior executive at a major telecom company in India told *The Hindu* that employees were unable to access emails or send service-disruption alerts to customers. Call-centre traffic also increased, the executive said.

Rahul Ganapathy, CEO of deep tech start-up Atsuya Technologies, said customer emails and scheduled Teams meetings were disrupted, though his company did not rely entirely on Microsoft.

At a Big Four professional services firm in Bengaluru, a senior employee said its internal operations were affected, but added that IT teams were restoring services.

The disruptions also left airlines experiencing customer-support delays.

IndiGo said its email support was affected and advised customers to use 6E Skai, its AI-powered virtual assistant. Akasa Air warned of email support delays and directed passengers to its customer care centre and social media. Air India said flight operations were unaffected, although it rerouted emails.

Separately, India's Computer Emergency Response Team (CERT-In), under the Ministry of Electronics and Information Technology, issued a high-severity advisory on Friday, warning of multiple vulnerabilities in Microsoft products. It flagged an Outlook vulnerability that it said was being actively exploited and urged users to apply security updates.



A fix: Outage affected email access and workplace applications in businesses, public sector, and other firms across the globe. REUTERS

'Recovery under way'

Microsoft identified Exchange Online – described as its cloud-based messaging platform that delivers email, calendar, contacts, and tasks – as the primary service affected. Some Microsoft Graph requests accessing Exchange Online data timed out, affecting dependent features in Teams, Copilot, and SharePoint, the company said. Core Teams messaging and online meetings largely continued normally, it added.

On Friday, Microsoft said recovery was progressing, with improvements in North America and Europe and encouraging signs in Asia-Pacific. Service availability and email delivery were improving, but intermittent access problems and delays could continue, it said, adding that it was working through email backlogs and retained a 48-hour timeout window to protect delayed messages. Service health and capacity had not fully returned to baseline, it said.

The company said it was not aware of any malicious activity causing the disruption and promised that it would publish a detailed report on the root cause and corrective measures after services were restored.

In some countries, government services were affected by the outage.

Singapore's Government Technology Agency and Japanese Ministries reported email disruptions, according to local media reports and official notices.

In Britain, Rachel Harrison of the GMB Union said National Health Service staff handling emergency calls could not refer to patient details as they normally would, creating a "massive backlog". Britain's National Pharmacy Association said the outage delayed prescriptions, *AFP* reported.

Sai Rahul Poruri, CEO of FOSS United, said India should reduce dependence on external technology providers. He called for a more diverse provider ecosystem, citing Germany's approach of allowing individual regions to choose their email providers, many of which use free and open-source software.

Sambratha Shetty, chief operating officer of Synergia Foundation, called for backup channels, multiple providers, and tested continuity plans.

महत्वपूर्ण तथ्य

In retaliation, Iran targets U.S. radar in Bahrain

Stanly Johny

Iran's Islamic Revolutionary Guard Corps (IRGC) on Friday said it had "destroyed" a U.S. military early-warning radar in Bahrain, in retaliation for a U.S. strike on a telecommunications tower in Sirik, Iran.

"...in response to the enemy's air attack on a telecommunications tower in Sirik, the IRGC destroyed the early-warning radar of the American aggressors on the island of Bahrain," the IRGC said.

The U.S. denied the claims and said it intercepted two "one-way attack drones" launched at Bahrain by the Guards.

FULL STORY ON
» PAGE 12



महत्वपूर्ण तथ्य

China stages unannounced Pacific drills around Taiwan

Reuters
TAIPEI

China carried out a large, unannounced military exercise across the western Pacific and around Taiwan in early November, in what officials in Taipei have described as a campaign of "silent intimidation" aimed at pressuring Taiwan and other governments before major international meetings.

A senior Taiwan security official, speaking on condition of anonymity due to the sensitivity of the matter, said China's military and coast guard had at one point massed more than 100 vessels in the region early this month, conducting drills that included simulated attacks on other militaries and cities including Taiwan's.



A Taiwanese coast guard ship monitoring a Chinese coast guard ship off Taiwan's northeastern coast. AFP/FILE PHOTO

The naval deployment was larger than "Justice Mission 2025", China's last formally named drills targeting Taiwan nearly a year ago and one of the largest Chinese naval deployments to date, the official said.

The drills come as China, which views democratically governed Taiwan as its own territory, has stepped up its military pressure over the past five years, drawing condemnation from Taipei and heightening concern in Western capitals about the potential for conflict.

Chinese President Xi Jinping on Thursday gave a major policy speech about Taiwan, urging peaceful "reunification" though making no mention of using force.



महत्वपूर्ण तथ्य

'115 Bharat Summit speakers denied entry into India'

R. Ravikanth Reddy
HYDERABAD


Shashi Tharoor

Senior Congress leader and MP Shashi Tharoor has alleged that 115 of the 315 speakers invited to the second edition of the Bharat Summit in Hyderabad were denied entry into India or had their visas cancelled, "apparently on the instructions of the Union Ministry of Home Affairs".

Mr. Tharoor, who is in Hyderabad for the Bharat Summit, in a post on social media platforms, questioned the legal basis for the action. He pointed out that the summit would conclude on Saturday, making it impossible to reverse the decision in time for the affected participants to attend. "What a shame that a proud democracy has become so insecure that it must stifle any voices it fears will be critical!" he wrote.

Earlier, Congress MP Chamala Kiran Kumar Reddy had also said that nearly 30% of the invitees could not travel to India because of visa related issues.

When the External Affairs Ministry was asked about Mr. Tharoor's post on visa rejection, Ministry spokesperson Randhir Jaiswal said: "Visa matters are sovereign functions of any country or any government."

CM slams BJP

Telangana Chief Minister A. Revanth Reddy questioned the BJP's criticism of Congress leader Rahul Gandhi's participation in the Bharat Summit, wondering why the party was "spewing venom" against the Leader of the Opposition in the Lok Sabha when he was coming to participate in discussions on important issues. Mr. Gandhi is scheduled to participate in the valedictory session on Saturday.

Addressing a press conference in Hyderabad, Mr. Reddy said the BJP should welcome Mr. Gandhi in a democratic spirit and use the international platform to share its views rather than oppose his participation or blindly brand him as anti-national. By denying visas to journalists who questioned Prime Minister Narendra Modi, the government was showing India in a poor light, he said. "Journalists ask questions, and one has the right to respond or not, but not to block them," he said.

He said that portraying the Leader of the Opposition as anti-national was a new political phenomenon, and recalled the tradition of earlier governments involving Opposition leaders in important international engagements.

Bharat Summit

YouTube Homework

- 12th BPF
- 13th ADMM
- G-20 FMM

महत्वपूर्ण तथ्य

भारत शिखर सम्मेलन 2026 (Bharat Summit 2026) से जुड़ी मुख्य जानकारी इस प्रकार है:

- **कहाँ हो रहा है:** यह सम्मेलन हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर (HICC) में आयोजित किया जा रहा है।
- **कब से कब तक:** यह दो दिवसीय आयोजन 13 और 14 नवंबर 2026 को हो रहा है।
- आयोजन कौन करा रहा है: इसका आयोजन तेलंगाना राज्य सरकार द्वारा किया जा रहा है, जिसमें कांग्रेस पार्टी के नेता और विभिन्न वैश्विक संगठन भी शामिल हैं।

उद्देश्य क्या है:

- इस सम्मेलन की थीम "Forging a New World" (एक नई दुनिया का निर्माण) रखी गई है।
- इसका मुख्य उद्देश्य लगभग 70 देशों के अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और विचारकों को एक मंच पर लाना है।
- इसमें वैश्विक शांति, न्याय, जलवायु परिवर्तन, लैंगिक समानता, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) गवर्नेंस, दक्षिण-दक्षिण सहयोग और राजनीतिक व आर्थिक सुधारों जैसी वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा की जा रही है।

Home Assignment

- World Theatre day
- Bharat Net Project

Thanks For Watching

Follow us for more Updates

@RRESULTMITRAOFFICIAL

Join our Telegram

@SUNILVERMA_THEIASMENTOR

Follow on Instagram

Subscribe Now

Stay Connected

Learn Share Grow Together ♡

Better Students Brighter Tomorrow



